अथ पदरत्नावली ।

इसमें–श्रीसुन्दरदासजीकृत पद और अन्य महात्मा-
ओंके पद तथा वाणीभी हैं ।

श्रेष्ठि रामरतन लड्ढा–पाली (मारवाड)
निवासीने,
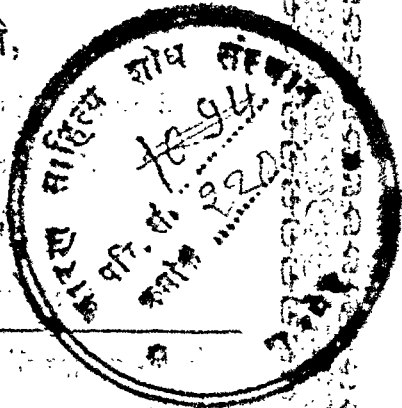
प्रस्तावना ।

दासानुदास साधु श्रीसेवारामजी महाराजके अन्तःकरणमें श्रीरामगुरुदेवजीकी प्रेरणासे फुरणा हुई कि; श्रीसुंदरदासजीरा पद प्रसिद्ध कमछै सो राग ढाल संजुक्त छपजावे तो घणा सज्जन पुरुषांरे गावणमें आवे तो ठीकछै। फेर आ बात महात्मा श्रीदेईदांनजीसे पूछी तो कही के ठीक बात है. फेर सतसंगी सज्जन पुरुषांने भी कह्या यह बात उत्तम है। तब सुंदरदासजीरा पद छुट-कर तथा छुटकरबाणी औरभी महात्मावोंरा पद लिखाया छै सो शुची देख लेणी। और सज्जन पुरुषोंसे यह विनय है कि, मिनपादेही दुर्लभ लख चौरासी भुगततां भुगततां बहुत कष्ट कर पाईहै। तो सतसंगत कर सच्चा शास्त्र सुणना बाँचना विचारना यह मुक्तीका रस्ता है ॥ फेर

गुरुसेवा करणी, तनमन बचनसूं गुरुबतावै सो मंत्रका जपकरणा, सीलराखणो, जीव प्राणी मात्रकी दया राखणी, सांच बोलणो, संतोष राखणो येही मुकतीका रस्ता है । इस जीवके अग्यानरूपी भरमकी टाटीमूं अज्ञानी हुयरह्या है । सो अज्ञान मेटणके वास्ते वेद सिद्धान्त श्रवण मननकर निध्यासन कर अज्ञानकों दुरकर अपने स्वरूपका सोधन करना. क्यों? यह मनुषा देह बहुत मुसकलसें तीन ताप भुगततां भुगततां पाई है तो वृथा नहीं गमाना चाहिये इस पुस्तक का बारंबार विचार करणेसूं ज्ञान वैराग उपजे-गा सो वारंवार पाठ करना राम भजन करणा वाणीमें कह्या मुजिब चलणा, इनसेंही मुकतीहै.

सज्जनोंका अनुग्रहीत—

रामरतन लड्ढा ।

॥ श्रीरामजी श्रीगुरुदेवजी ॥

अथ

पदरत्नावलीकी अनुक्रमणिका ।

इति

पदरत्नावलीकी-अनुक्रमणिका

समाप्ता.

॥ श्रीः ॥

श्रीरामगुरुदेवजी ।

अथ पदरत्नावली.

छुटकरपद--राग बिलावल ।

भगतिदान मोय दीजिये देवनके देवा । जनमपाय बिसरूं नहीं करूं चरणारी सेवा ॥ टेर॥ इण मारग रिध सिध घणी सुरपुरहै वासा । इतना कबहुं न माँगहूं जबलग तन सासा ॥ १ ॥ राजपाट सुख सायबी सुंदर सुत नारी ॥ सुपनामें इच्छा नहीं मोय आन तिहारी॥२॥ सब रिधको सिध नामहै किरपा कर

दीजै। भवसागरसूं काढके अपणो कर लीजै ॥३॥ दास कबीररी वीनती अवगत सुनलीजो। अन्तर पड़दा खोलके मोय दरसन दीजो ॥ ४ ॥

पद ३.

तेरी भगतीको गुण कहा जगजन एक समाना। केतो निज करता नहीं के झूठा बाना ॥टेर॥ मानसरोवर का गुण कहा तहां हंस दुखियारी। केतो वो सरवर नहीं के बुग भेषधारी ॥ १ ॥ पुहुपबासका गुण कहा अली लेत न वासा। के वो पुहुप थिर नहीं के भँवरउदासा ॥ २ ॥ कलप बिरछका गुण कहा नहीं कलपना जाइ।

के वो सुरविरछ नहीं के सेवग जुटाइ ॥ ३ ॥ साधुसंगतका गुण कहा मनका भरम न जाइ। के तो निज साधू नहीं के मन कुटलाई ॥ ४ ॥ इमरत पियांका गुण कहा विषकूं नाहिं पेले। के तो गुरु साँचा नहीं के मन नहीं झेले ॥ ५ ॥ दातारगीका गुण कहा कछु दान न दीना। के कबीर तुम दानपती हमही करम हीना ॥ ६ ॥

पद २.

राग सोरठ ताल खेरवो ॥

इकराजा नगर उजीणीका।साँई कारण जो गलियो है मोहतज्यो मिरगानेणीका।टेर॥ त्यागी कनक छतर सिंघासन हीरा रतन

जडाणीका। त्यागे तुरँग गेंद घूमता लाख-हजारांकी लेणीका॥ १ ॥ हेषुरषे सूर छिपजाते शब्द न सुणता वेणीका। सो सुख छाँड भया भिखियारी वीर मेणावती बेनीका ॥ २ ॥ रोवे सूर सुभट पट रानी रोवे भाट भटियाणीका। हसती घोडा गांव परगना माणक दान करांनीका ॥ ३ ॥ रूखाविरछां कंथा सींवें थे गलवाट विडांणीका । भोजन पान फूल फल टूका बासी कूसी रहणीका ॥ ४ ॥ परबतवासी गुफा निवासी ध्यान धरे तिरबेणीका । दास भरतरी अमर भयाहै सतपुर सांकी रहणीका ॥ ५ ॥

पद ३.

इक काशीपुरीका वासी हो। जात जु-
लावा नाम कबीरा जगसूं रहत उदासी
हो ॥ टेर ॥ पाँच पचीस आप वशकीया
पकडि या मनमें वासीहो । माया
मान वडाई त्यागी मिले राम अवि-
नाशीहो ॥ १ ॥ सुर नर मुनी ऋषीसुर
जेता वंछे वरण सन्यासीहो । मुगतीखेत
चलै मगहरकूं ऐसा दृढ विसवासीहो ॥२॥
अगनी नहीं जरे धरणी नहिं गडे पडे
हन जमकी फांसीहो । सदेही हरिमांय
समाया देखेफूल सुभासीहो ॥ ३ ॥ हिंदू
तुरक दोहूंसूं न्यारा भरम करम किया
नासी हो । दास कहै वांहां कोउक पूगसी
और वातां वोत वणासी हो ॥ ४ ॥

पद ४.

राग काफी ताल तितालो ।

हरिगुणगायलेरे जबलग सुखीरे शरीर । पीछे याद न आवसी रे पिंजर व्यापे पीर ॥ टेर ॥ भाग बडा हरिजन मिल्या रे पडियो समदमें सीर । हंसा होय चुग लीजिये रे नाम अमोलक हीर ॥ १ ॥ ओसर जाय दिनोदिन बीतो जिउं अंजलीको नीर । बोरन हंसो आवसी रे मानसरोवर तीर ॥ २ ॥ जोबन थकां भजलीजिये रे जे जन कीजे वीर । चाल बुढापो आवसी रे जद मन धरे न धीर ॥ ३ ॥ सब देवनको देव राम इयो सब पीरनको पीर । कहै कबीर भज-लीजिये रे हरिहैं सुखरी सीर ॥ ४ ॥

पद ५.

हंसा तोने चालणो रे रहैणा नहीं रे निधियांन। आज काल दिन पांचमें रे पंछी करत उडान् ॥ टेर ॥ पंथ बुरो विच भै घणो रे हैघर दूर पयान। रहै न कोई राखसी रे जद् आवे फुरमान ॥ १ ॥ नेकी बदी थारे संग चले रे दूजा ओर न जान। जब चाले जब एकलो रे वसुधामेल जयांन ॥२॥ सदाई संगाती थारा रामजी रे सो तूं वेग पिछाण। कहै कबीर भजलीजिये रे छांडकुटुम कुलकाण ॥ ३ ॥

पद ६.

राग हुजाज ताल दीपचंदी।

ऐसो नीच संगाती मन तूं ऐसो

नीच संगाती रे ॥ टेर ॥ निशिदिन रहत नीच नीचनसें आठपहर दिनराती रे। विषकी बात लगे अति सीतल हरि-चरचा न सुहातीरे ॥ १ ॥ आवत जावत लगरहि मनमें कुकरम रोपे छाती रे। मृगतृष्णाजलछाँड बावरो चेटै न सुखकी घाटी रे ॥ २ ॥ बैठ सभामें मीठो बोले मनमें राखे पासी रे। जाण पूँछकर पड़यो नरकमें बीततहै दिनराती रे ॥ ३ ॥ कहाकरूं इण मनकी घाती लगे न तिलभर वाती रे। कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागवण मिटाती रे ॥४॥

पद ७.

साँची राम सगाई जगमें साँची राम सगाई रे। करम कटे चौरासी

छूटे जीव परमपद पाई रे ॥ टेर ॥
काशीमे इक जात जुलाहो निरगुण
भगति चलाईरे । प्रेमकाज हरि पीछे
डोले वालद आण ढलाई रे ॥ १ ॥
साँची भगती नामदेरी कहिये मरतक
गऊ जिवाई रे । देवल फेरयो दूधपिलायो
हितकर छान छवाई रे ॥ २ ॥ सांची
भगति धनाजी री कहिये बिनवायां धउ
लाई रे । बीजभात सन्ता ने दीना निरं-
जन नाथ निपाई रे ॥ ३ ॥ सांची भगती
पीपाजी री कहिये चंदरवेरी आग
बुजाई रे । सेन भगतको सांसो मेटयो
आप भया हरि नाई रे ॥ ४ ॥ भिलनीका
बोर सुदामाका तंदुल रुचिरुचि भोग

लगाई रे । दुरयोधनका मेवा त्यागग्या साग विदुरघर पाई रे ॥ ५ ॥ प्रीत सहत अर्जुन रथ हांक्यो तीनूं लोक बडाई रे। विना प्रीत रावण घर देखो लंक बिभीषण पाई रे ॥ ६ ॥ गुरुपरताप साधुकी महिमा मो मुख वरणि न जाई रे । अगरदास दासनकी महिमा आप सिरीमुख गाई रे ॥ ७ ॥

पद ८.

राग जंगलो ताल धेरवो ।

संसार सारो झूंठो रे । कोइ राम नाम धन लूटो ॥ टेर ॥ रामनामकी लूट मचीहै सारा किउनाहिं लूटो। इण लूट्यासूं परम पदारथ गुरू नारायण तूटो ॥ १ ॥

इणपर भूरी ऐसी माया जागतडो नर सूतो। ज्ञान विना कैसे नर पावै निर्गुणरो पद ऊंचो॥२॥काम क्रोध अरु लोभ मोह तो ओ किणसूं नहिं छूटो। पांचूं चोर वसे कायामें पहला इणनें कूटो ॥३॥ कूड कपटकर माया जोडी आपहि फिरे न चीतो। सुकृत काम कबू नहिं कीनो तासूं फिरे विगूतो ॥४॥ धन माया घरमें वहुतेरी सुकृतनाम अपूठो। इण मायारो कही पदारथ भरियो सागर खूटो ॥५॥ मनकूं मार इंद्रियां जीते सो पूगे वैकुण्ठो। जनम मरण तेरो मिटजाई नहि आवेला पूठो॥६॥ परमेश्वर सूं प्रीत लगावो इणजगसूं आरूठो। सतगुरु किरपा ऐसी कीनी इमरतरो

मेहवूठो ॥ ७ ॥ अबतो परभू पार उतारो ओ औसर मत चूको। कहत कबीर सुनो भाइ साधो इकदिन वेलाकूको ॥ ८ ॥

पद ९.

दयाभाव राखीजैरे भाई अंतगरभ नहिं कीजे ॥ टेर ॥ आयांने तो आदर दीजै नमस्कार निव कीजे ॥ इण बातांसूं सायब राजी आछागुण धारीजे ॥ १ ॥ मातापिताकी सेवाकीजे जुगमें आपसरीजै। यो लोक परलोक भलोवै सुखमें वास वसीजै ॥२॥ बेर बुराई छाँड़ ईरषा सतसंगत नित कीजै ॥ सायब सब घट माय विराजै ऐसी वात लखलीजै ॥३॥ गुणसागर मुक्तीको मारग आ निसचै करलीजै ॥

वेद पुराण भागवत कहैछै विनां गुरां भर-
मीजै ॥ ४ ॥ गुणको हीण हुवे जगमांहीं
वासूं जगनहिं धीजै । गुणसागर धारण
करै तो दरस किया दुख छीजै ॥५॥ अष्ट-
पहर हरिका गुण गावो हरिचरणां चित
दीजै । दास दोलरी आइ वीनती तार विल-
म नहिं कीजै ॥ ६ ॥

पद १०.

राग बरवो ताल खेरवो ।

मनवा नांय विचारी रे । थारी मारी
करतां उमर वीती सारी रे ॥ टेर ॥
नवदस मास गरवमें राख्यो आप विहा
रीरे । नाथ वायर काढ भगती करसूं
थारी रे ॥ १ ॥ वालपणेमें लाड लडायो

माता धारी रे । भर जोबनमें जुवांनी आई नारी प्यारीरे ॥ २ ॥ माया माया करतो फिरियो जुडे सु मारी रे । कौडी कौडी कारण लेतो राड उधारीरे ॥ ३ ॥ विरध भयो जब इउं उठ बोली घरकी नारी रे । अब बुढलो मरजाय छूटेंगे लार-हमारी रे ॥ ४ ॥ रुकगये सांस दमूं दरवाजा मंडरईगारी रे । कालूराम गुरां रे सरणें कथ दी सारी रे ॥ ५ ॥

पद ११.

मनवा भली विचारीरे । सतगुरुजीरो सरणो लेतां सुधरी सारी रे ॥ टेर ॥ लख चौरासी भरमत भरमत दुख सयो भारीरे । अब मिनषा तन मोसर पायो मत चुक

लिगारी रे॥१॥ काम क्रोध मद लोभ त्याग भज आप मुरारी रे । निरगुण नाम जपो निशिवासर मन मेट विकारी रे॥ २॥ कोई करो परसंस्या पूजा कोइ देवो गारी रे । समदृष्टी सबहीमें देखो मिलो सुगति संजारी रे ॥ ३॥ मात पिता सुत वित नहिं संगी ना सँग नारी रे । राम सत्तगुरु देव विनानहिं देव अधारीरे ॥४॥ भजन प्रताप नीच भये ऊंचा महिमा भारीरे। सूरदास सतगुरुकी किरपा जनम सुधारी रे॥ ५॥

पद १२.

राग हुजाज ताल दीपचंदी ।

भजन गढवांधोरे मेरा भाईथारे जमसें होवेगी लडाई ॥ टेर ॥ ग्यानकेगढकूं सम-

झकरराखो खिम्या लगावो खाई । लोभ मोहकूं मार हटावो कामकी फोज ढहाई ॥ १ ॥ दया तोपकी त्यारी राखो ग्यानका गोला चलाई । साँचकी चकमक अगन दिखावो लोभकूं मारहटाई ॥ २ ॥ नैनका पाट किवाडी ढकलो सरवण बारि बुंदाई ॥ ३ ॥ ररंकारको ध्यान लगावो ऐसो समान कराई ॥ ३ ॥ पांचांकूं मार पचीसूं वश कर जोतमें जोत मिलाई । कहै कबीर सुनो भाइ साधो जब तुम जीतो लडाई ॥ ४ ॥

पद १३.

जोवनधन पांवणा दिन चारा जाको गरभ करै सो गिंवारा ॥टेर॥ पशुकी चांम-

का बनत पनईया नोवत मँड़त नगारा। नर तेरी चांम काम नहिं आवे बल जल होसी छारा॥ १॥ हाड चामका वन्या पींजरा भींतरभरया भंगारा। ऊपर रंग सुरंग लगा-या कारीगर किरतारा॥ २॥ दश मसतक वाके वीस भुजा हैं पुत्तर वो हो परवारा। मरद गिरदमे मिलगया वे लंकारा सिर-दारा॥ ३॥ ओसंसार ओसको पानी जातां न लागे वारा। कहतकबीर सुनो भाइ साधो हरिभज उतरो पारा॥ ४॥

पद १४.

राग वरवो ताल खेरवो।

चितवन मेरी तुमसें लागी पिया चित-वन मेरी॥ टेर॥ हम चितवत तुम चित-

वत नाहीं ऐसा क्या कठिन कठोर हिया ॥ १ ॥ दिन नहिं भूख रैन नहिं निदरा छिन छिन व्याकुल होत हिया ॥ कहै कबीर सुनो भाइ साधो चितवत चितवत अपना किया ॥ २ ॥

पद १९.

पद निरवाण लखे कोइ विरला ॥ टेर ॥ तीनलोकमें काल समाणा चौथे लोकमें नाम निसाणा ॥ १ ॥ बिन रसना धरे अंतर ध्याना सो लख पावत पुरुषपुराणा ॥ २ ॥ करम काट गुरु निरमल कीना गुरुपद चरणकमल धर ध्याना ॥ ३ ॥ गुरु रामानँदजी करत बखांना दास कबीरजीको निरमळ ग्यांना ॥ ४ ॥

पद १६.

जग वहे गयो रे माया मोहकी धार ॥ टेर ॥ सूकी नदी सकल जग डूबा हरि-जन पार उतरगया रे ॥ १ ॥ गुरुसूं कपट नेह नारीसूं ऐसा मूरख होयरयारे ॥ २ ॥ सुगरावे सो चरण पलोटे नुगरा खाली रहे गया रे ॥ ३ ॥ जलविच कमल कमल विच कलियां भँवर वासना लेगया रे ॥४॥ सायब कबीर मिल्या गुरु पूरा दास गरीब गुणगाय रया रे ॥ ५ ॥

पद १७.

सतगुरु बाग लगाया रे देखो अज-ब तरेका ॥ टेर ॥ तखता चार चोरासी क्यारी पिचरंग फूल सुहायारे ॥ १ ॥ मोह-

का कूप बागके माहीं वारंवार सिंचाया रे ॥ २ ॥ जलविच कँवल कँवल बिच कलियाँ जहां जाय भँवर लुभाया रे ॥ ३ ॥ कहे कबीर सुनो भाई साधो आवागवण मिटाया रे ॥ ४ ॥

पद १८.

जागहे म्हारी सुरत सुहागण ॥ टेर॥ क्या सोवे भर लोभ मोहमे झूठ भजनमें लाग रे॥ १ ॥ दोउ कर जोड सीसधर चरणा भगति अमर वर माँग रे ॥ २ ॥ चितधर श्रवण सुणै धुन अंतर होत मधुरधुन राग रे ॥ ३ ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो जगत पीठ दे भाग रे ॥ ४ ॥

पद १९.

राग झिंझोटी ताल खेरवो ।

खबर नहीं है जुगमें पलकी । सुकरत करणा राम सिवरणा कुण जाणे कलकी ॥ टेर ॥ तारामंडल रवी चंदरमा सवी चलाचलकी । दिनां चारके चमतकार में बीजलियां भलकी ॥ १ ॥ घन भावत तन चंचल हसती तसती दे धमकी । साँसो साँस सिवर सायवकूं आव घटे तनकी ॥२॥ जवलग हंसा है देहीमें कुसियां मंगलकी । हंसा देही छांड चले जब माटी जंगलकी ॥ ३ ॥ कूड़ कपट कर माया जोडी कर वातां छलकी । पापाकि पोट धरी सिर ऊपर कैसे होय हलकी ॥ ४ ॥

ओ संसार सुपनकी माया ओसबूंद जल की । विनसजावतां वार न लागे दुनियां जाय खलकी ॥५॥ मात पिता अरु कुटम कबीलो दुनियां मतलबकी । नारी प्यारी देह सँगाती ये तेरे कबकी ॥ ६ ॥ दया धरम सीलको मारग ये वातां सतकी । काम क्रोध जाके नाहिं व्यापे विनती अखेमलकी ॥ ७ ॥

पद २०.

राग जंगलो ताल खेरवो ।

जैसे तैसे गुजर जायगा ये तेरा गुजरा ना वे ॥ टेर ॥ चिंता करे कछु हाथ न आई होनहार नाहिं मिटे मिटाई । सावधा न होय सुमिरण कीजे तजदो मान अभि

मांनावे॥१॥भोर होत चल देना खासा रहे नहिं मिंत्र कितहु कर वासा। क्या मंदिर क्या बाग बगीचा झुपडी क्या मैदांनावे २॥ शरीरको हुयजा रुखवारी वस्तर मातर मिल जाय खाली।क्या सुलसुल क्या गजा अदोतर क्या कंवल अलखानावे ॥ ३ ॥ भोजन जो कछु मिले सो पावे प्राणोंका पालण हुयजावे चीणा चवीणा साग पात क्याक्या मेवा मिसटांनावे ॥४॥ अष्टपहेर निरंतर रहना हरीभजनसें कभी न हटना। और प्रमांण सवी वातोंका याका नाहिं परवांनावे ॥५॥ नाम रूप गुणतें है न्यारा सतचित आनंद भाव हमारा। निरसैं राम रामकी सोगन येही निरमल ग्यानावे ॥६॥

पद २१.

लावणी।

थे गरूद्यालजी सरणे आयांरी राखो लाज हो ॥ इण ढालमें गावणो।

भरतखंड मांही भाऊ संत आया जीवां तारणे ॥ टेर ॥ एरीवीकाणेसूं सोले जोजन लाखा सरहैं गाव विसनूं कुलमें आपअवतरे हेभगतीरा ठांव ॥ १ ॥ महंत श्रीहरलाल दासजीके चरणां लागे आय। बाबा मनोरकी संगत करके तत्त्वज्ञान लियो ताय ॥ २ ॥ ग्यानभक्ति वैरागकापूरा, रामनाम लवलीन देखत पाप दूरहुयजावे कोटि जनम भर कीनहो ॥ ३ ॥ परसत पद पावन हु-

यजाई पातक नाहिंरहाई।जोसतसंग करै तनमनसूं पदनिरवाण मिलाई हो ॥४॥ हे समरूप मित्रखल जिनके रागधेस कछु नाहीं।शेस सहस मुख सोभागावे तोई पार नाहिं पाई हो ॥ ५ ॥ भाऊ संत वडे उजियागर तीनूं तापमिटाय। वरसवासटे वैशाखवद दशमी ब्रह्मसमायहो ॥ ६ ॥ संतनकी महिमा अपारहै वेदपुराणों माहीं दास नवलकी कहा अधिकाई सवगुण गाय सुणाईहो ॥ ७ ॥

पद २२.

राग माढ ताल खेरवो।

महिमा कहे गाउं रे कैसे पधारचा भाउदासजी ॥ वलही वल जाउं रे कै

से अवतारिया भाउदासजी ॥ टेर ॥ लाखां सरमें आप अवतरे विसनोंयां कुल मांय । धिन जननी ऐसा सुत जाया भवसागर बिच जाझरे ॥ महि मा० ॥ १ ॥ बालपणेसुं भगति कमाई ग्रस्तारंभके मांय । सतसंगत वे करी वोतसी साध तणा वेदासेर ॥ म० ॥ २ ॥ ग्रस्तारंभकूं झूंठो जांणके दियो तुरत छिटकाय ॥ श्रीपेडापें आय पहुंचिया पूरण खोल्या भागेर ॥ म० ॥ ३ ॥ श्री-हरलाल दासजीकुं गुरु कीना गयाम नोहर्पास । तत्वज्ञानकूं धारण कीनो विरती अती अगाधेर ॥ म० ॥ ४ ॥ शु-कदेव मुनीसों आसण आयके रहे

ध्यान लवलीन भल कोई आवो भल कोई जावो नहीं किसीसुं प्रीत रे ॥ म०॥ ॥ ५ ॥ रामछमा सालग तणी अरजहै येही सुणजो श्रीमहाराज हाथ पकडियो किरपा करके तैसेहि कर जो पार रे ॥ म० ॥ ६ ॥

पद २२.

राग सोरठ ॥ ताल खेरवों।

नहिं हैं ऐसो जनम वारमवार। पूरवले पुन पावियोरे प्राणी मानुषो अवतार ॥ टेर ॥ गरभवास प्रतिपाल कीनी ताहि भूलोगिवाँर। कहीरे उत्तर देवसी रे राजाराम तणे दरबार ॥ १ ॥ घटत छिनछिन वधत तिल तिल जातां न लागे

वार । तरवरसूं फल ढहै पडै रे प्राणी वोहोर न लागे डाल ॥ २ ॥ संसार सागर विषम भरियो वेहत कुंडीधार । रामनामका बांध तुंबा उतर पेले पार ॥ ३ ॥ ग्यान चोपड मांझप्राणी सुरतकरले सार । अब तेरे पासा हाथ हेरे प्राणी जीतभावे हार ॥ ४ ॥ काम क्रोध मद लोभ त्रिसना ताहि बंधियो संसार । दास नामो जीतियो केवल नामके आधार॥५॥

पद २४.

राग कानडो ।

राते माते नाम तुमारे काहेकी परवा हे हमारे ॥ टेर ॥ झिलमिल झिलमिल नूर तुमारा । परगट पेले प्राण हमारा ॥

॥ १ ॥ नूर तुमारा नैंणां माहीं। तनमन लागा छुटे नाहीं ॥ २ ॥ प्रेममगन मतवारे माते रंग तुमारे दादूराते ॥ ३ ॥

पद २५.

कबीरो बिगाडियो राम दुवाई। तुम जन बिगडो मेरा भाई ॥ टेर ॥ पारसमूं जो लोहा छूवेगा। बिगड बिगड सो कंचन वेगा ॥ १ ॥ चंदणके ढिग बिरछ दुवेगा। बिगड बिगड़ सो चंदण वेगा ॥ २ ॥ गंगामें जो नीर मिलेगा। बिगड बिगड सोइ गंग हुवेगा ॥ ॥ ३ ॥ कहै कबीर जो राम कहेगा। बिगड बिगड सोइ राम हुवेगा ॥ ४ ॥

पद २६.

राग सोरठ ताल खेरवो।

सुलतानी बल कबका रैंदा। जाको नेह लग्यो कदमांसूं अल्लाराम पुकारैंदा॥ टेर॥ चेरी सूती खरी बिगूती चाबक चोट चकारैं दा। पातसाहसूं किया जबाबा येही हवाल तुमारैंदा॥ १॥ धिन वे बांदी गरू हमारी राह बताया पिव प्यारैंदा शेष सहिद अरु पीर अवलिया सिध कस बूरी सारैंदा॥ २॥ सवाटांक तन चोलो पहिरे पांच टांक तनसा रैंदा। अब तो बोज उठावण लागा गूदड़ सेर अठारैंदा॥ ३॥ चंगी चीज निवाला लेता ताता तुरत तिहारैंदा। अब तो सीला

पाव न लागा टूका सांझ सवेरंदा ॥ ४ ॥ चुनचुन कलियां सेजबिछाती कलीकली रस न्यारेंदा । अवतो सरणां लिया जमींदा कंकर नाहिं बुहारेंदा ॥ ५ ॥ दलवादल ले हस्ती चढता पडती धींनगा रेंदा । अव तो प्यादल चलणे लागा त्यागाकिया पैंजारेंदा ॥ ६ ॥ इतना तजकर लिवी फकीरी धिनआकीं न विचारेंदा । कहै कवीर सुनो भाइ साधो फकड ग्यांन अखारेंदा ॥ ७ ॥

पद २७.

हे वैराग स्त्राग सायवको जे कोइ सिरपर धारेवे । रीझेराम अभै पद देवे भव-सागरसूं तारेवे ॥ टेर ॥ सहस इठ्यासी

अजसुत कहिये नवजोगेसुर न्यारावे ॥ दक्षसुतकुं उतराध पठाये नारदकर उपकारावे ॥ १ ॥ दतकी दिसट परी जदु भूपर ताकूं ग्यान दिढायोवे । शुकदेव-पार कियो परीक्षित सो ग्रंथांमें गायोवे ॥ ॥ २ ॥ गगतें ग्यान लियो बाजींदे हुय-विचरयो वैरागीवे।गोरख गोपीचंद भरतरी ये तीनूं बडत्यागी वे ॥ ३ ॥ साह सुलतांन वकारो त्याग्यो सुण बांदीकी सीखांवे।कुल की कांण करी जन कांने मांगरु खाई भीखांवे ॥ ४ ॥ लछवे राग बिना सुख-नाहीं सबहि संत यूं गावेवे। लछाविन फिरे जगतमें केता लछ सबके मन भावेवे ॥ ॥ ५ ॥ श्रीभगवान कह्यो उद्धवसूं एकाद-

सकेमांहीवे। लाल कहै सुरलोकां जावो निरव्रत विन सुखनांहीवे॥ ६ ॥

पद २८.

रागमारु ताल दीपचंदी।

जिवडा थारो कोइ न संगाती रे। छाड-चलेगो वावरो कुटम कुल न्यातीरे॥ टेर॥ तनधनजोवनझूंठहै कूडा कमठांणारे। प्रा-णसनेही को नहीं सवलोक विडाणारे॥१॥ वोहो परवारो अकलो अंतही उठजाणा रे। संगबोलाउकोनहीं घर दूर पयांणारे॥ ॥२॥ रामभजनकी वेरहे मत सोय नची-तोरे। काल अचानक मारसी जैसे मिर-घांने चीतो रे॥ ३॥ करणा सो करली-

जिये ओसरहै नीको रे । सहज राम हरि ध्यायले कारज कर जिवको रे ॥ ४ ॥

पद २१.

पिया तेरे नाव लोभाणीहो । नाम लेत तिरतासुण्या जैसे पाहिन पांणीहो ॥ टेर ॥ अजामेलसे ऊधरे जम त्रास मिटाणीहो पुत्रहेत पदवी दई जगसारेने जांणीहो १॥ सुकरत कबूनां कियो बोहोकर मकमाणी-हो । गनिका कीर पढावतां वैकुंठ पठांणी हो ॥ २ ॥ अरधनाम कुंजरालियो जाकी अवध घटांणीहो । गरुड छांड हरिआ-विया पशुजूंण मिटाणीहो ॥ ३ ॥ नाम महातम साखसुण परतीत वँधांणीहो । मी-रामहिमा नामकी सब वेद बषांणीहो ॥४॥

पद ३०.

राग सूरसारंग ताल दीपचंदी।

रामजी साधुसंगत मोय दीजो। वेर-वेर में करूं वीनती किरपा मोपर कीजो॥ टेर॥ साधुसंगत विरमादिक वंछे सनकादिक मुनि ज्ञानी। जो सुख पावे साधुसंगतमें सो सुख नहिं रजधानी॥ १॥ करै करुणाउपदेश वतावे डूवत भुजा पसारे। साधुसंगतकी आई वडाई कोट-जतन करतारे॥ २॥ सदाइ आनंद रहत हिरदामें हरि आनंदमें झूलै। ज्यांरी संगत दो किरपाकर छिनभर राम न भूले॥ ३॥ कामरु क्रोध लोभ नहिं

ज्यांरे रामनाम मुख गावे। सूरदासकी याही विनती साधुसंगत मनभावे॥ ४॥

पद ३१.

नारद मारे साधांसूं अंतर नांहीं। जो मेरे साधांसूं अंतरराखे सो नर नरका जाहीं॥ टेर॥ वां लिछमी म्हारे अरध सरीरी हरीजनांकी दासी। अडसठ तीरथ संतांके चरणां कोट गया अरु काशी॥ १॥ साधु जिमाय जबै मैं जीमूं साधु पोढायर सोऊं। जो मेरे संतांकी निंद्या करहैं क्रोड विघन कर खोऊं॥ ॥ २॥ साधु चले आगेहुय चालूं मोय भगतकी आसा। ज्यां मेरे हरिजन हरि-गुण गावे तहां लिया मैं वासा॥ ३॥

जो मेरे हरिजन ऊजड ध्यावे कर गेह पंथ बताऊं। अपने तनको ले पीतांबर छँहिया करतो जाऊं ॥ ४ ॥ मोय भजै संतनकूं सेवे सोई परमपद पावे। सूरदास संतनकी महिमा आप सिरीमुख गावे ॥५॥

पद ३२.

राग लोरी।

क्यूं बंदे हरिनाम बिसारे सूतो लंबी छहिया रे लो ॥ टेर ॥ मात पिता दिन दोयका संगी दुरदा संगी सांई रे लो। एते ओते दोय दिहाडा हरिविन छूटत नाहीं रे लो ॥ १ ॥ डूबी दुनियां झूँठा आलम-प ांना धमदा किसा भरोसा रे लो। जाके सिरपर काल खडा है जाकूं कैसी आसा

रे लो ॥ २ ॥ कंचनदेही थारी माटीमें मिलसी जंगलहोसी वासा रे लो । क्या जाणूं प्रभु क्या करदेसी किसविध ढलसी पासा रे लो ॥ ३ ॥ सांझपडे पत्थर-पर चलणा देदे पाँव अगाई रे लो॥ तेरूडा तिरबाने लागा गाफल गोता खाई रे लो ॥ ॥ ४ ॥ मिलवानालों प्रीतन कीजे हरि विन छूटत नाही रे लो ॥ साहूसेन फकीर सांईदा देदे रोवे दाही रे लो ॥ ५ ॥

पद ३३.

राग बरवो ।

मतकर जोबनियेरो मानरे मन मूढ अज्ञान ॥ टेर ॥ छिनछिन छीजत जाय तन तेरो होत जीवनमें हान ॥ १ ॥ धन

जोवनका गरव न करना मायारा तोफांन ॥ २ ॥ कहत कवीर सुनो भाइ साधो वेग मिलो गुरु आन ॥ ३ ॥

पद ३४.

राम गुरुदेवजी। राम राम राम० ॥
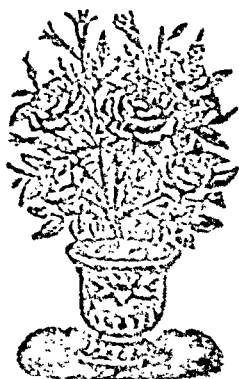
अथ ज्ञानमंगल ।

राग बिलावल सोरठ ।

परथम सतगुरु सरणे जायके सीस निवाइये । पीछै दोउंकर जोडके अरज मनाइये ॥ १ ॥ मैंहूँ दुखी अनंत सुख मेरे कीजिये । मेरा औगुण देख आप नहीं खीजिये ॥ २ ॥ सतगुरु परम कृपाल कृपाकर यूं कयो । इतरादिन तुं तो जाय बेसकर कहांरयो ॥ ३ ॥ कलहै कलपना कुमत कुबद सँगमें रयो । जनम जनम वाके संग दुःखमें अतिसयो ॥ ४ ॥ सतगुरुके वे साच अबे सुणलीजिये । कलहै कलपना कुमत कुबद तज दीजिये

॥ ५ ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह कैसे मरै। या मरियां विनां काज मेरा कैसे सरै ॥ ६ ॥ सील संतोष अरु दया पिम्याकूं धारलो । काम किरोध और लोभ मोहकूं मारलो ॥ ७ ॥ सत संगत ओर साच सुमत धारण करो। निंद्या चुगली झूठ तीनांकूं परहरो ॥ ८ ॥ अहंकार अग्यान दोनूं ऐतो जवर है । या दोनूंकूं देख आवे नहीं सबरहै ॥ ९ ॥ ग्यान अरु वैराग हिरदे धरलीजिये।अहंकार अग्यान दोनूं तज दीजिये ॥ १० ॥ एक सोच दूजो फिकर जिकर तीनूं तजो । पीछै बैठ इकंत एक हरीकूं भजो ॥ ११ ॥ आसा त्रिसना और असुय्या तज दी-

जिये। राग दोष दोनूं चोर संग नांहिं लीजिये ॥ १२ ॥ मद मतसर अरु मांन बडाईकूं तजो। लेवो नीगरीबीधार बोहोत इणमें मजो ॥ १३ ॥ तजदो कूड कपट बुराई बेरकूं। इमरत वाणी बोल छाड दो जहरकूं ॥ १४ ॥ दुबध्या दूरनिवार ईरषा परहरो। सायब सबघट मांय निवण सबकूं करो ॥ १५ ॥ एक मन दूजी बुधि तीजो चित जानिये। या तीनांकूं पेंच इकठा आणिये ॥ १६ ॥ केवे संत सुजांण तजो सब कांमकूं। धरलो निरंतर ध्यान जपो निज नामकूं ॥ १७ ॥ ममता माया दोऊं तुरत तजदीजिये। कनककामणी को संग

कबूनहीं कीजिये ॥ १८ ॥ भजन तणे परताप भलो तुम जानिये। सुरत जगतसूं काढ भजनमें आणिये ॥ १९ ॥ के वे सतगुरु संत कयोअब कीजिये । झूठो है संसार देख नाहिं धीजिये ॥ २० ॥ तज दो पंथ कुपंथ सुपंथमें चालणो । मनमाया मांय जाय जिकणकूं पालणो ॥ २१ ॥ निंदरा आलस त्याग ध्यान नित कीजिये। दिढआसणकूं धार अमीरस पीजिये ॥ ॥ २२ ॥ करणा परउपकार भलाई लीजिये । जुगमें एताजीव दुःख नहीं दीजिये ॥ २३ ॥ अतिहैं ऊंडी खान गृहै अँधकूपकी। डूबो सब संसार खबर नहीं रूपकी ॥ २४ ॥ केवें वेद पुराण

वायर अवनीसरो । सुखसागरमें आय दुःख सब वीसरो ॥२५॥ सतगुरु हेलो देत सबे सुणलीजिये। झूँठो है संसार याकूं तज-दीजिये ॥२६॥ धीरज लेवो नीधार नहचो मनमे रखो । लेवो सतगुरुजीकी ओट जगतकूं तजसको ॥ २७ ॥ समदृष्टीकर जोय दूजो कोउ हैनहीं । यासूं इधको ग्यांन फेर केहूंकहीं ॥ २८ ॥ निजमनकूं लो धार मनकूं मारियें । इणविध दोलू-दास काज तुम सारियें ॥ २९ ॥ लिखियो मंगल ग्यांन जे कोइ गावसी। जे कोइ लेसी धार परमपद पावसी ॥ ३० ॥

इति ।

॥ श्रीः ॥

अथ पद ।

महाराज श्रीसुंदरदासजीरा लिख्यते ।

राग हुजाज ताल दीपचंद्री ।

ढाल जगमें साँची राम सगाई । फेर इतनी रागांमें गाईजे ।

रागघोडी ताल कवाली । ढाल ॥

क्यूं ठाढी नंदपोली । गवालण किहुं ठाढी नंदपोली चरण दो वडाकहीजे पहली दोय तुक धीमें कहेणी । लारली दोय तुक ऊंचे सुर कहेणी ॥ या वात सुजन पुरुष समझ लेणी ।

रागकल्याण ताल धीमो तेतालो ढाल ।

मुगट परवारी जाऊं नागर नंदारी । फेर सांझ कल्याणमें गवीजे दो बडा चरणांसू ॥

राग बरवो ताल खेरवो ढाल ।

मतकर जोबनियारो मांन चरणइके बडा गाईजे ॥

रागसोरठ तालतेतालो ढाल ।

अब हरि भूलां नाहिं बने चरणइके बडा गाईजे ॥

राग विहाग ताल दीपचंदी ढाल ।

शरण तिहारी आयो कुटम तज ॥

राग आसावरी ॥ ताल दीपचंदी ढाल ॥

पनला थिर रे नहीं थारी काया । चरण दो बडा गावीजे ।

रागकालिंगडो तालकव्वाली ढाल।

आयो हरि भजवां नोटांणो भूला नर-सिम फिरो छो रे।

इतनी रागांमें पद १४ गावणा॥

हमारे गुरु दीनी एकजरी। कहा कहूँ कछु कहत न आवे। अमृत रसहीं भरी॥ टेर॥ ताको मरम संतजन जानत वस्तु अमोल खरी। यातें मोय पियारी लागत लैकरि सीस धरी॥ १॥ मन भुजंग अरु पंच नागिनी सूंघत तुरत मरी॥ डायनी एक खात सब जगकूं सोभी देख डरी॥ ॥ २॥ त्रिविध विकार ताप तिहुं भागी दुरमाति सकल हरी॥ ताको गुन सुन मीच

पलाई और कवन बपुरी ॥ ३ ॥ निशिवा सर नहिं ताहि बिसारत पलछिन आध घरी ॥ सुंदरदास भयो घट निरविष सबही व्याधि टरी ॥ ४ ॥

पद १.

पदमें निरगुन पहिचाना । पदको अरथ विचारै कोई पावै पद निरवाना ॥ टेर ॥ पद बिन चलैं जहां पद नाहीं पदहैं सकल निधाना ॥ ज्यों हस्तीके पदमें सबपद काहू पद न भुलाना ॥ १ ॥ देव इंद्र विधि शिव वैकुंठहि ए पद ग्रंथ निगाना ॥ जीवपदसो परचै नाहीं मूये पद किन जाना ॥ २ ॥ पदप्रसिद्ध पूरण अविनासी पद अद्वैत बखाना । पदहै

अटल अमरपद कहिये पद आनंद न छाना ॥ ३ ॥ पद पोजेते सवपद विसरै विसरै ग्यानरु ध्याना। पदको तात परि यसो पावे सुंदर पदहि समाना ॥ ४ ॥

पद २.

मेरा गुरु लागे मोय प्यारा। शवद सुनावे भरम उडावे करै जगतसों न्यारा ॥ टेर ॥ जोग जुगतकी सवविधि जांनै वातें कछू न छांने ॥ मनपवना उलटा गहि आनै आनै छानै जानैं ॥ १ ॥ पांचूं इंद्री दृढकर राखे सुन सुधारस चाखै। वानी ब्रह्म सदाही भाषै भाषै चाखै राखै ॥२॥ परमार थको जगमें आया अलख खजीना लाया॥ वांट वांट सवहिनसों खाया खाया ल्याया

आया ॥ ३ ॥ परम पुरुषसो प्रगटे आहू श्रवण सुनाया नादू ॥ सुंदरदास ऐसा गुरु दादू दादू नादू आदू ॥ ४ ॥

पद ३.

अब हम जान्यो सबमें साखी। साष पुरातन सुनी आगली देह भिन्न करि नाखी ॥ टेर ॥ साखी सनकादिक अरु नारद दत्त कपिल मुनि आखी ॥ अष्टावक्र वसिष्ठ व्यास सुत उन प्रसिद्ध यह भाषी ॥ १ ॥ साषी रामानंद गुसाँई नाम कबीरहि राषी ॥ साषीसंत सकलही कहिये गुरु दादू यह दाषी ॥२॥ साषी कोऊ और न जानत मनमें यह अभिलाषी ॥ अब तो साषी भये आपही सुंदर अनुभव चाषी ॥ ३ ॥

पद ४.

अवके सतगुरु मोय जगायो। सूतो हुतो अचेत नींदमैं वहुत काल दुप पायो ॥ टेर ॥ कवहूँ भयो देव करमानि करि कवहूँ इंदर कहायो ॥ कवहूं भूत पिशाच निशाचर पात न कवहुं अघायो ॥ १ ॥ कवहूं असुर मनुष्य देह धर भूमंडलमें आयो ॥कवहूं पशुपंछी पुनि जलचर कीट पतंग दिखायो ॥ २ ॥ तीनूं गुनके करम न करकै नानायोनि भ्रमायो ॥ स्वरग मृत्यु पाताल लोकमें ऐसो चक्र फिरायो ॥ ३॥ यह तो सुपनो है अनादिको वचन जाल विथरायो ॥ सुंदर ग्यान प्रकाश भयो जव भरम संदेह विलायो ॥ ४ ॥

पद ५.

साधो साधन तनको कीजै । मनपवना पांचूं वस राखै सुंन सुधारस पीजै ॥ टेर ॥ चंद सूर दोउ उलट अपूठा सुखमनके घर लीजै ॥ नादबिंदु जब गांठ परै तब काया नेकु न छीजै ॥ १ ॥ राजस तामस दोऊ छाडै सात्विक बरतै तीजै ॥ चौथा पदमें जाय समावै सुंदर जुगजुग जीजै २

पद ६.

देषो भाई ब्रह्म अकाश समान । परब्रह्म चेतन व्योम जड यह विशेषता जान ॥ टेर ॥ दोऊ व्यापक अकल अपार माति दोऊ सदा अखंड । दोऊ लिपै छिपै कहुँ नाहीं पूरण सब ब्रह्मंड ॥ १ ॥

ब्रह्ममाहिं यह जगत देषियत ब्योममाहिं घन योंही॥ जगत अभ्र उपजै अरु विनसे वेहैं ज्योंके त्योंही॥ २॥ दोऊ अक्षय अरु अविनासी दृष्टि मुष्टि नहिं आवै॥ दोऊ नित्य निरंतर कहिये यह उपमा न बतावै॥ ३॥ एहै तो एकरूप दिखाईहै भ्रममत भूलो कोई। सुंदर कंचन तुलै लोहसँग तो कहा सरवर होई॥ ४॥

पद ७.

अवधूभेषदेषजनभूलै। जब लग आतमादिष्ट न आई तब लग मिटै न सूलै॥ टेर॥ मुद्रा पहिर कहावै जोगी जुग तन

दीसै हाथा । वह मारग कहुं रयो अंतही पहुंचै गोरख नाथा ॥ १ ॥ ले संन्यास करै बहु तामस लांबी जटा बधावै । दत्त देवकी रहनि न जानै तत्त्व कहांतैं पावै ॥ ॥२॥ मूंड मुडाय तिलक करि रुदाये माला गलै फुलाई । जिहि सुमिरन कीनो सब संतन सो तो षबर न पाई ॥ ३ ॥ तहँ वँध बांधी कुतकालीना दम दम करै दिवाना ॥ महमदकी करणी नाहिं जानै किम पावै रहै माना ॥ ४ ॥ दरशान लियो भली श्रम कीनी क्रोध करो जिन कोई । सुंदरदास कहैं अभिअंतरि वस्तु विचारो सोई ॥ ५ ॥

पद ८.

अवधू आतम काहे न देखै। जाहि हते सोई तुझमाहीं कहा लजावत भेखै ॥टेर॥ हिंसा वहुत करै अपस्वारथ स्वाद लग्यो मद माँसै ॥ महा माय भैरूंके सिरदे आपहि वैठो ग्रासै ॥ १ ॥ गोरष भांग भषीनाहिं कवहूं सुरापान नाहिं पीया ॥ झूठहि नाम लेत सिधनीको नरक जाय गो भीया ॥ २ ॥ कान फारके भसम लगाई जोगी कियो शरीरा ॥ सकल वियापी नाथ न जान्यो जनम गमायो हीरा ॥ ३ ॥ नाटक चेटक जंत्र मंत्र करि जगत कहा भरमावै । सुंदरदास सुमिरि अविनाशी अमर अभैपद पावै४॥

पद ९.

हरिबिन सब भ्रम भूलिपरै। नानाविधि के क्रिया करम करि बहुविधि फलन फरै ॥ टेर ॥ कोऊ सिरपर करवत धारै कोऊ हीमगरै। कोऊ झंपा पात लेइकर सागर बूडि मरै ॥ १ ॥ कोऊ मेघाडंबर भीजहि पंचाअग्नि जरै ॥ कोऊ सीतकाल जल पैठे बहु कामना भरै ॥ २ ॥ कोऊ लटक अधोमुख झूलहि कोऊ रहत षरै ॥ कोऊ वनमें षात कंद षिण बलकल वसन धरै॥३॥कोऊ तीरथ कोउ वरत करि कष्ट अनेक करै। सुंदर तिनकों को समझावै पुहपित बचन छरै ॥ ४ ॥

पद १०.

ग्यान बिन अधिक अलुझत है रे। नैन भये तो कौन कामके नेक न सूझत है रे ॥ टेर ॥ सबमें व्यापक अंतरजामी ताहिन बूझत है रे। भेद दृष्टिकर भूल पर्यो है तातें झूलत है रे॥ ॥ १ ॥ कठिन करमकी परत भापसी माय अमूझत है रे। सुंदर घटमें कामधेनु हरि निशिदिन दूझत है रे ॥२॥

पद ११.

सबकोउ भूल रहे इह बाजी। आप आपके अहंकारमें पादसाह कहा पाजी॥ ॥ टेर ॥ पादसाहके बिभौ बहुत विधि पात मिठाई ताजी। पेट पयादो भरत

आपनो जीमत रोटी भाजी ॥ १॥ पंडित भूले वेद पाठ करि पढि कुरानको काजी। वे पूरबदिशि करै दंडवत वे पछिमही निवाजी ॥ २ ॥ तीरथिया तीरथको दौरै हजको दौडै हाजी ॥ अंतरगतको षोजै नाहीं भ्रमणैहीसों राजी ॥ ३ ॥ अपने अपने मदके माने लषै न फूटी साजी ॥ सुंदर तिनाहिं कहा अब कहिये जिनके भई दुराजी ॥ ४ ॥

पद १२.

मन मेरे उलट आपको जानी। काहेको उठि चहुँदिशि धावै कौनपरी यह बानी ॥ ॥ टेर ॥ सतगुरु ठौर बताई तेरी सहज सुंन पहिचानी ॥ तहांगये तोय काल न

व्यापै होय न कबहूं हानी ॥ १ ॥ तूंही सकल वियापी कहिये समुझ देख अस मानी ॥ तूंही जीव शीव पुनि तूंही तूंही सुंदर मानी ॥ २ ॥

पद १३.

अब हम गहे रामजीके सरनै। वा बिन और नहीं कोइ समरथ मेटे जामण मरनै ॥टेर॥ भटतक फिरे बहुत दिनताईं कहूं न पार उतरनै ॥ आनदेवकी सेवा करकर लागे बहुतहि जरनै ॥ १ ॥ काहू ऊपर कियो बहुत हठ काहू ऊपर धरनै ॥ दीजै दोष करम अपनेको वे दिन योंही बरनै ॥२॥ अवतारनकी महिमा सुन सुन चाले

तीरथ फिरनै ॥ दियो बताय पुरुष वह एकै सुंदरका कहि बरनै ॥ ३ ॥

पद १४.

फेर इतना पद इतनी रागमें गाइजै ॥ राग बिलावल । ताल तेतालो ॥ ढाल ॥

है कोइ ऐसा राम मिलावै ।

ब्रहमकूं सिणगार न भावै।

राग ठूमरी ताल कवाली ॥ ढा० ॥

रथचढ रघुनंदन आवतहैं ॥ राग जंगलो ॥ कोई कनडोई केवे । ताल तेतालो ॥ ढा० ॥

कबीरो बिगाडियो राम दवाई री ॥

ढा० पद ८ हैं ॥

संतसमागम करिये हो भाई ॥ टेर ॥ जान अजान छुवै पारसकूं लोह पलट

कंचन हुय जाई ॥ १ ॥ नानाविधि वनराइ कहावन भिन्न भिन्न कर नाम धराई ॥२॥ जाको वास लगे चंदनकी चंदन होवत वावन काई ॥ ३ ॥ नवका रूप जान सत संगति तामैं सवकोइ वैठो आई ॥ ४ ॥ और उपाय नहीं तिरवेको सुंदर काढी राम दुवाई ॥ ५ ॥

पद १.

संत सुखी दुषमै संसारा ॥ टेर ॥ संत भजन कर सदा सुपारे जगत दुषी गृहके विवहारे ॥ १ ॥ संतनके हरि नाम सकल निधि नाम सजीवन नाम अधारे ॥ ॥ २ ॥ जगत अनेक उपाय कष्ट करि उदर पूरना करै दुपारे ॥ ३ ॥

संतनकूं चिंता कछु नाहीं जगत सोच कर कर मुख कारे ॥ ४ ॥ सुंदरदास संत हरि सनमुष जगत विमुष पच मरै गिंवारे ॥ ५ ॥

पद २.

सोय सोय सब रैन विहानी । रतन जनमकी षबर न जानी ॥ टेर ॥ पहिले पहर मरम नहिं पावा । मात पितासूं मोह बँधावा ॥ १ ॥ षेलत खात हँस्या बहु रोया । बालापन ऐसैंही षोया ॥ २ ॥ दूजै पहर भया मतवाला । परधन पर त्रिय देष षुशाला ॥ ३ ॥ काम अंध कामनिसँग जाई । ऐसैंहि जोबन गयो सिराई ॥ ४ ॥ तीजे पहर गया तरुनापा ।

पुत्र कलत्रका भया सँतापा ॥ ५ ॥ मेरे पीछे कैसी होई। घरघर फिरिहै लरिका जोई ॥ ६ ॥ चौथे पहर जरा तन व्यापी। हरि न भज्यो इहिं मूरष पापी ॥ ७ ॥ कहै समझावै सुंदरदासा ॥ रामविमुष मरगये निरासा ॥ ८ ॥ २ ॥

पद ३.

कैसे राम मिले मोय संतो यह मन थिर न रहाई रे ॥ निहचल निमिप होत नहिं कबहूं चहुँदिशि भागा जाई रे ॥ टेर ॥ कौन उपाय करूं या मनको कैसी विधि अटकाऊं रे ॥ १ ॥ ऐसे छूटि जाय या तनतैं कितहूं खोजन पाऊं रे ॥ २ ॥ सोये स्वरग पताल निहारे जागे जात न दीसे रे ॥ ३ ॥ खेलत फिरे विषै वनमाहीं

लीये पांच पचीसे रे ॥ ४ ॥ मैं जान्यो मन अब थिर होई दिनादिन पसरन लागारे ॥ ५ ॥ नाना चीज धरूं ले आगे तज करंक पर कागा रे ॥ ६ ॥ ऐसे मनका कौन भरोसा छिनछिन रंग अपारा रे॥७॥ सुंदर कहे नहीं वश मेरा राखे सिरजन हारा रे ॥ ८ ॥

पद ४.

रामबुलावे राम बुलावे । राम बिना यह श्वासन आवे ॥ टेर ॥ रामहि श्रवनहु सबद सुनावे । रामहि नैनहु रूप दिखावे ॥ १॥ रामहि नासा गंध लिरावै । रामहि रसना रसहि चखावै ॥ २ ॥ रामहि दोऊ हाथ हलावै । रामहि पाँवहू

पंथ चलावै ॥ ३ ॥ रामहि तनको वसन उढावै ॥ राम सुवावै राम जगावै ॥ ४ ॥ रामहि चेतन जगत नचावै॥रामहि नाना षेल षिलावै ॥ ५ ॥ रामहि रंकहि राज करावै ॥ रामहि राजहि भीख मँगावै॥६॥ रामहि बहुविधि जल वरषावै । रामहि पलमें धूर उडावै ॥ ७ ॥ रामहि सबमें भिन्न रहावै । सुंदर वाकी वाही पावै ॥८॥

पद ५.

षोजत षोजत सतगुरु पाया । धीरे धीरे सब समझाया ॥ टेर ॥ चिंतत चिंतत चिंता भागी । जागत जागत आतम जागी ॥ १ ॥ बूझत बूझत अंतर बूझ्या । सूझत सूझत सब कछु सूझ्या ॥२॥ जानत

जानत सोही जान्या । मानत मानत निश्चै मान्या ॥ ३ ॥ आवत आवत ऐसी आई ॥ अब तो सुन्दर रही न काई ॥ ४ ॥

पद ६.

सबकोउ आय कहावत ग्यानी । जाकूं हरष शोक नहिं व्यापै ब्रह्मज्ञान की यही निसानी ॥ टेर ॥ ऊपर सबै व्यवहार चलावै अंतहकरण सुन्य करि जानी ॥१॥ हानि लाभ कछु धरै न मनमें इहिविधि विचरै निरअभिमानी ॥ २ ॥ अहंकारकी ठौर उठावै आतमदृष्टि एक उर आनी ॥ ३ ॥ जीवनमुगत जान सोइ सुन्दर और बातकी बात बयानी ॥ ४ ॥

पद ७.

ग्यान तहां जहां द्वंद न कोई। वाद विवाद नहीं काहूसूं गरक ज्ञानमें ज्ञानी सोई ॥ टेर ॥ भेदाभेद दृष्टि नहिं जाके हरष सोच उपजे नहिं दोई ॥ १ ॥ समता भाव भयो उर अन्तर सार लियो सब ग्रंथ बिलोई ॥ २ ॥ स्वरग नरक संशय कछु नाहीं मनकी सकल वासना धोई ॥ ३ ॥ वाहीके तुम अनुभव जानो सुन्दर उहै ब्रह्ममय होई ॥ ४ ॥

पद ८.

राग कालिंगडो। ताल कवाली। टा० ॥

लालूलाज हमारी रषरे ॥ फिर दूसरी रागमें गावणो ॥ पद ८ हैं।

कोइ पीवै रामरस प्यासा रे। गगनमंडलमें अमृत सरवे उनमनके घर वासा रे ॥ टेर ॥ सीस उतार धरै धरती पर करै न तनकी आशा रे। ऐसा महिंगा अमी बिकावे छह ऋतु बारह मासा रे ॥ १ ॥ मोल करै सो छकै दूरतें तोलत छूटै बासा रे। जो पीवै सो जुगजुग जीवे कबहुं न होय विनासा रे ॥ २ ॥ या रस काज भये नृप जोगी छांडे भोग विलासा रे। सेज सिंघासन बैठे रहते भसम लगाय उदासा रे ॥ ३ ॥ गोरख नाथ भरथरी रसियो सोई कबीर अभ्यासा रे। गुरु दादू परसाद कछू इक पायो सुंदरदासा रे ॥ ४ ॥

पद १.

देषो दुरमत या संसारकी । हरिसो हीरा छाडि हाथतें बांधतपोट विकारकी ॥ टेर॥ नाना विधिके करम कमावत षवर नहीं सिरभारकी ॥ १ ॥ झूँठे सुखमें भूलि रहे हैं फूटी आंष गिंवारकी ॥ २ ॥ कोइ षेती कोइ बनजी लागै कोई आस हथ्यारकी ॥ ३ ॥ अंध अंधमें चहुँदिसि धाये सुध विसरी किरतारकी ॥ ४ ॥ नरक जानके मारग चालै सुन सुन बात लवारकी॥ ५॥ अपने हाथ गलेमें वाही पासी माया जारकी ॥६॥ वारंवार पुकार कहतहूं सोहै सिरजन हारकी ॥ ७ ॥ सुंदरदास विनस कारी है देह छिनकमें छारकी ॥ ८ ॥

पद २.

नर राम भजनकर लीजिये । साधुसं-
गत मिल हरिगुन गइये प्रेमसहितरस
पीजिये ॥ टेर ॥

भ्रमत भ्रमत जगमें दुष पायो अब
काहेकूं छीजिये ॥ १ ॥ मनुषा जनम
जान अतिदुरलभ कारज अपनो की-
जिये ॥ २ ॥ सहज समाधि सदा
लय लागै इहविधि जुग जुग जीजिये ॥
॥ ३ ॥ सुंदरदास मिलै अविनासी
डंड काल सिर दीजिये ॥ ४ ॥

पद ३.

नरचिंतन करिये पेटकी । हलै चलै
तामैं कछु नाहीं कलमज पोजो ठेटकी
॥ टेर ॥ जीव जंतु जलथलके सबही

तिन निधि कहा समेटकी ॥ १ ॥ समय पाय सबहिनकूं पहुँचै कहां बाप कहां वेटकी ॥ २ ॥ जाको जितनो रच्यो विधाता ताको आवै तेटकी ॥ ३ ॥ सुंदर दास ताहि किन सुमिरौ जोहै ऐसा चेटकी ॥ ४ ॥

पद ४.

यामें कोउ नहीं काहूको रे । राम-भजन कर लेहु बावरे औसर काहेकुं चूको रे ॥ टेर ॥ जिनसों प्रीत करतहैं गाढी सो मुष लावै ल्यूको रे ॥ १ ॥ जारि बारि तन षेह करैंगे देदे मूँदठ-ह्वको रे ॥ २ ॥ जोर जोर धन करत एकठो देत न काहू टूको रे ॥ ३ ॥

एकदिनां योंही सब जैहैं जैसे सरवर सूको रे ॥ ४ ॥ अजहूं बेग समझ किन देषो यह संसार बिभूको रे ॥ ५ ॥ मायामोह छांडकारि बौरे सरन गहो हरिजूको रे ॥ ६ ॥ प्रान पिंड सरजे जिन साहिब ताकों काहिन कूको रे ॥ ॥ ७ ॥ सुंदरदास कहैं समुझावैं चेलोहै दादूको रे ॥ ८ ॥

पद ५.

रामनाम रामनाम रामनाम लीजे। रामनाम रटीरटी रामरस पीजै ॥ टेर ॥ रामनाम रामनाम गुरुतैं पाया। रामनाम मेरे हिरदै आया ॥ १ ॥ रामनाम रामनाम भज रे भाई। राम

नाम पटंतरि तुलै न काई ॥ २ ॥
रामनाम रामनाम है अतिनीका । राम
नाम सब साधनका टीका ॥ ३ ॥ राम
नाम रामनाम अति मोहि भावै । रामनाम
निशिदिन सुंदर गावै ॥ ४ ॥

पद ६.

रे मन राम सुमिरि राम सुमिरि रामकी
दुहाई। ऐसो औसर विचारि कर तैं हीरा
न डारी ॥ पशुके लच्छन निवारी मनुपा
देहपाई ॥ टेर ॥ सकल सौंज मिलि आई ।
श्रवन बैन गाई ॥ संतनकों सिर नवाई ।
लेपे तनु लाई ॥ १ ॥ दासनके होहु दास ।
छूटेसब आसपास ॥ करमनको करै नास ।
शुद्ध होय भाई ॥२॥ सतगुरुकी करहु सेव ।

जिनतें सब लहै भेव ॥ मिलहै अविना-
शिदेव। सकल भुवनराई ॥ ३ ॥ समझै
अपनो सरूप। सुंदरहै अतिअनूप ॥ भूप
निको होय भूप। साँची ठकुराई ॥ ४ ॥

पद ७.

तूं अगाध तूं अगाध तूं अगाध
देवा ॥ निगम नेति नेति कहै जानै
नाहिं भेवा ॥ टेर ॥ ब्रह्मादिक विष्णु
शंकर शेषहू बषाने। आदि अंति माधि
तुमहीं कोऊ नहीं जाने ॥ १ ॥ सनका
दिक नारदादिक शारदादिक गावैं।
सुर नर मुनिगन गंधर्व कोउ नहीं
पावैं ॥ २ ॥ साध विध थकित भये

चतुर बहु सयाना। सुंदर दास कहा कै है अतहीहै राना ॥ ३ ॥

पद ८.

रागजंगलो तालकवाली ढाल।

सियावर री सुध आई आज मोथ सियावर की ॥ महासूरा तिनको जस गाऊं जिन हरिसों लै लाई रे॥ मन में वासी कियो आप वसि और अनीति उठाई रे॥ टेर ॥ प्रथम सूर सतयुगमें कहिये ध्रुव दृढ ध्यान लगायो रे॥ माया छलकर छलनैं आई डिग्यो न बहुत डिगाई रे ॥ १ ॥ सनक सनंदन नारद सूरा नव जोगेश्वर न्यारा रे। तीन गुनाको त्याग निरंतर कीयो ब्रह्म विचारा रे ॥२॥

रिषभ देव नृप सूर शिरोमनि जाय वस्यो वनमाहीं रे । एकमेक ह्वै रयो ब्रह्मसूं सुध शरीरकी नाहीं रे ॥ ३ ॥ जनप्रह्लाद जोध जोरावर पिता दई बहु त्रासा रे ॥ राम नामकी टेक न छांडी प्रगट भयो हरि-दासा रे ॥ ४ ॥ शूर वीर दत्तात्रय ऐसो विचरत इच्छाचारी रे ॥ भयो स्वतंत्र नहीं परतंत्र सकल उपाधि निवारी रे ॥ ॥ ५ ॥ व्यासपुत्र शुकदेव सुभट अति जनमत भयो विरक्ता रे ॥ रंभा मोहि सकी नहीं ताको सदा ब्रह्म अनुरक्ता रे ॥ ॥ ६ ॥ गोरखनाथ भरथरी सूरा कमधज गोपीचंदा रे ॥ चरपट कणेरी और चौरंगी लीन भये तजि द्वंदा रे ॥ ७ ॥ रामानंद

कियो सूरा तन काशीपुरी मँझारी रे॥ लोक उपासक शिवके होते आनि भक्ति विसतारी रे॥८॥ नामदेव अरु रंका वंका भयो तिलोचन सूरा रे॥ भगति करी भयछाँड जगतको वाजे तनके तूरा रे॥९॥ कलजुगमाहिं कियो सूरा तन दास कवीर निशंका रे॥ ब्रह्म अगनि पूजालि पलकमें जीतालियो गढवंका रे॥१०॥ जन रैदास साध सूरा तन विप्रन मार मचाई रे॥ सोझा पीपा सेन धना तिन जीती बहुत लडाई रे॥११॥ अंगद भुवन फरस हरिदासा ग्यान गह्यो हथियारा रे नानक काना वेण महाभद्र भलौ वजायो सारा रे॥१२॥ गुरु दादू प्रगटे सेमरमें

ऐसा शूर न कोई रे ॥ बचनबान लायो जाके उर थकत भयो सुन सोई रे ॥१३॥ आदि अंत कीयो सूरा तन जुगजुग साध अनेका रे ॥ सुंदरदास मौज यह पावै दीजै प्रेम विवेका रे ॥ १४ ॥

पद १.

रागसोरठ गिरनारी तालकवाली तथा ढा० ॥

रघुनाथहैं प्राण हमारा। इण ढालमेंभी गाईजे । जे कोइ सुनें गुरांकी वांनी । सो काहेकूं भरमें प्रानी ॥ टेर ॥ घट भीतर सब दिखलावै । वडभागी वे सो पावै ॥ जो शबदमांय मन राषै। सो राम रसायन चाषै ॥ १ ॥ घट भीतर विसनु महेसा ।

ब्रह्मादिक नारद शेसा ॥ घट भीतर चंद्र कुवेरा । घट भीतर प्रगट सुमेरा ॥ २ ॥ घट भीतर सूरज चंदा। घट भीतर सात समुंदा ॥ घट भीतर कौतुक सारा । घट भीतर सुरसरी धारा ॥ ३ ॥ घटभीतरहै रस भोगी । गोदावरि गोरख जोगी ॥ घट भीतर सिद्धन मेला । घट भीतर आप अकेला ॥ ४ ॥ घट भीतर मथुरा कासी । घटभीतर गृह बनवासी ॥ घटभीतर तीरथ न्हाना । घटभीतर अवर न जाना ॥ ५ ॥ घटभीतर नाचै गावै । घटभीतर बैन बजावै ॥ घटभीतर फाग बसंता । घटभीतर कामनिकंता ॥ ६ ॥ घटभीतर सुरग पताला ।

घटभीतर है क्षय काला ॥ घटभीतर जुगजुग जीवै । घटभीतर अमृत पीवै ॥ ॥ ७ ॥ जब घटसूं परचै होई । तब काल न व्यापै कोई ॥ जन सुंदर कहै समझावै । सतगुरु बिन कोई न पावै ॥ ८ ॥

पद १.

राग केदारो ताल दीपक ।

व्यापक ब्रह्म जानहु एक । और भरम सब दूर करिये येही परम विवेक ॥ ॥ टेर ॥ ऊंच नीच भलो बुरो शुभ अशुभ यह अग्याना ॥ पुण्य पाप अनेक सुष दुष स्वरग नरक वषांना ॥ १ ॥ द्वंद ज्यौंलौं जगत तौंलौं जनम मरण

अनंत ॥ ह्रिदेमें जब ग्यान प्रगटै होय सबको अंत ॥ २ ॥ दृष्टिगोचर श्रुती पदारथ सकलहै मिथ्यात ॥ सुपनतें जाग्यो जबहिं तब सब प्रपंच विलात ॥ ॥ ३ ॥ यथाभानु प्रकाशतैं कहुँ तम रहै न लगार ॥ कहत सुंदर समझ आई तब कहां संसार ॥ ४ ॥

पद १.

देषो एक हैं गोविंद । द्वैत भावहि दूर करिये होय तब आनंद ॥ टेर ॥ आदि ब्रह्म अंत कीटहु दूसरो नहिं कोई ॥ जो तरंग विचारियें तो वहै एके तोई ॥ १ ॥ पंचतत्त्व अरु तीन गुनको

कहतहै संसार ॥ तउ दूजो नहीं है एक बीजको विसतार ॥ २ ॥ अनंत निरसन कीजिये तो द्वैत नाहिं ठहराय । नाहिं नाहिं करते रहै तहां बचनहू नाहिं जाय ॥ ३ ॥ हरी जगतमें जगत हरीमें कह तहै यों वेद ॥ नाम सुंदर धरयो जबही भयो तबही भेद ॥ ४ ॥

पद २.

रागमारू ॥ ताल दीपचंदी । ढा० ।

जिवडा थारो कोइ न संगाती रे जूवारी जूवा छाडो रे । हारिजाहुगे जनमको माति चौपड मांडो रे ॥ टेर ॥ चौपड अंतहकरणकी तीनोंगुन पासा रे ॥ सारी कुबुद्धि धरतहो यूं होय विनासा रे ॥ १ ॥

लखचौरासी घर फिरै अब नर तन पायो रे ॥ याकी काची सार व्है जो दांवन आयो रे ॥ २ ॥ झूठी बाजी है संडी तामें मति भूलो रे ॥ जीव जुवारी बापडा काहेकूं फूलो रे ॥ ३ ॥ सारी समझके दीजिये तब कबहूं न हारो रे ॥ सुंदर जीतौ जनमको जो राम सँभारो रे ॥४॥

पद १.

ऐसी मोय रैन विहाइ हो। कौन सुनै कासौं कहूं बरनी नाहिं जाई हो॥ टेर ॥ पूरन ब्रह्म विचार तैं मोय नींद न आई हो॥ जागत जागत जागिया सुतै न सुहाई हो ॥ १ ॥

कारण लिंग स्थूलकी सब संक मिटाई हो ॥ जाग्रत सुपन सुषोपती तीनूं बिसराई हो ॥ २ ॥ तुरिया पद अनुभौ भयो ताकी सुध पाई हो ॥ अहंब्रह्म यूं कहतहूं यूं गयो बिलाई हो ॥ ३ ॥ वचन तहां पहुंचै नहीं यह सेन बताई हो ॥ सुंदर तुरियातीतमें सुंदर ठहराई हो ॥ ४ ॥

पद २.

लगे सोय रामजी पियारा हो। प्रीत तजी संसारसें कीया मन न्यारा हो ॥ टेर ॥ सतगुरु शबद सुनाविया दीया ग्यान विचारा हो ॥ भरम तिमर भागे सबै घट भया उजियारा हो ॥ १ ॥ मैं वंदा उस ब्रह्मका जाका वार न

पारा हो ॥ ताहि भजै कोइ साधवा जिण तन मन मारया हो ॥ २ ॥ चाष चाष सब छांडिया मायारस खारा हो ॥ रामसुधारस पीजिये छिन २ वारं वारा हो ॥ ३ ॥ आन देवको ध्यावसी जाके मुष छाराहो ॥ रामनिरंजन ऊपरे सुंदर तन वारयाहो ॥ ४ ॥

पद ३.

ऐसा जन रामजीकूं भावेहो। कनक कामनी पर हरे नहिं आपबँधावे हो ॥ ॥ टेर ॥ सबहीसें निरवैरता काहू न दुषावेहो ॥ सीतल वाणी वोलके रस अमृत पावे हो ॥ १ ॥ कहे तो मुनी हुयरे वे केहारि गुण गावेहो ॥ भरम

कथा संसारकी सब दूर गमावे हो ॥ २ ॥ पांचूं इंद्री वश करे मनमाहिं मिलावे हो ॥ काम क्रोध मद लोभकूं षिण षोद वहावे हो ॥ ३ ॥ चौथापदकूं चीनके तामांय समावे हो ॥ सुंदर ऐसा साधके ढिग काल न आवे हो ॥ ४ ॥

पद ४.

रागबरवो चलत । ढाल ।

इण रे आंगणि ये हे सषी । सब षेलण आया कोइ षेल्याकोइ षेलसी ॥ एकहि ब्रह्म विलासहै सूक्ष्म और स्थूला । ज्यूं अंकूरतें वृक्षहै शाखा फल फूला ॥ टेर ॥ जैसे भाजन मृत्तिका अंतर नहिं कोई ॥ पानीतें पाला भया

पुनि पानी सोई ॥ १ ॥ जैसे दीपक तेज तैं ऐसा यहु पेला ॥ घाट घरे बहुभाँतिके है कनक अकेला ॥ २ ॥ वाय वघूरा कहनकौं ऐसा कछु जाना ॥ बादर दीसत गगनमें तऊ गगनविलाना ॥ ३ ॥ सतगुरुतें संसा गया दूजा भ्रम भागा ॥ सुंदर पटहि विचारतैं सबदेषे धागा ॥ ४ ॥

पद १.

एक अखंडित देषिये सब स्वयं प्रकासा ॥ छता अनछता ह्वैगया यह बडा तमासा ॥ टेर ॥ पंचतत्त्व दीसे नहीं नाहिं इंद्रिय देवा ॥ मन बुध चित दीसे नहीं है अलप अभेवा ॥ १ ॥ सत रज तम दीसे नहीं नाहिं जाग्रत सुपना॥

सुषुपतिहू तुरियानहीं नाहिं और अपना ॥ २ ॥ काल करम दीसे नहीं नाहिं आहि सुभावा ॥ प्रकृति पुरुष दीसै नहीं नहिं आव न जावा ॥ ३ ॥ ज्ञेय ज्ञाता दीसे नहीं नहिं ध्याता ध्याना ॥ सुंदर सोधत सोधतै सुंदर ठहुराना ॥ ४ ॥

पद २.

राग छंदगीतक तालरूपक ढाल।

नागके संगकूं दे बालक । जमना जलपे जायके ॥ प० ४ हैं ॥ देहके है सुन प्रानिया काहे होत उदासवे ॥ अरस परस हम तुम मिले ज्यौं पहुप अरु बासवे ॥ इक पहुप वास मिलाय जैसो दूध घृतज्यूं मेलवे । काष्ठमें ज्यों अग्नि

व्यापक तिलनमें ज्यूं तेलवे । जैसें उदक लवनामध्य गवना एकमेक वपांनिया ॥ सुंदरदास उदासकाहै देह कहै सुन प्रानिया ॥ १ ॥ जीव कहै काया सुनौं हम तुम होय वियोगवे। हम निरगुन तुम गुनमई कैसें रहत संयोग वे ॥ संयोग कैसें रहत तो सौं हों अमर अविनासवे । तूं क्षणभंगुर आहि बौरी कौन ताकी आसवे ॥ इक आस ताकी कहा करिये नाश होवै तिहिं तनो॥ सुंदर दास उदास यातैं जीव कहै काया सुनो ॥ २ ॥ देह कहै सुन प्रानिया तोहि न जानत कोइ वे । प्रगट सुतौ हमतैं भयो कृतघनि जिन होइवे ॥ इक होइ जिन कृतघनी कबहूँ

भोग वहुत विधितें किये । शबद सपरस रूप रस पुनि गंधनिके करलिये ॥ इक- लिये गंध सुवास.परिमल प्रगट हमतें जानिया ॥ सुंदरदास विलास कीने देह कहै सुन प्रानिया ॥ ३ ॥ जीव कहै काया सुनौ तूं काहू नहिं कामवे । सोभा दई हम आयके चैतन्य कीया चामवे ॥ इक चाम चैतन आय कीया दीया जैसे भौनवे वोलन चालन तवहिं लागी नहिं तर होती मौन वे । यहि मौन तेरो जबहिं छूटै तबहिं तुम नीकी वनो । सुंदरदास प्रकास हमतें जीव कहै काया सुनो ॥ ४ ॥ देह कहै सुन प्रानिया तेरे आंष न कान वे । नासा मुख दीसे नहीं हाथ न पाँव निसान वे ॥

इक हाथ पाँव न सीस नाभी कहां तेरो देखिये। भिन्नन हमतें जबहिं बोले तबहिं भूत विसेषिये। डरै सब कोइ शब्द सुनिके भरम भै करमानिया। सुंदरदास आभास ऐसो देह कहै सुन प्रानिया॥ ॥५॥ जीव कहै काया सुनौ तो में बहुत विकार वे। हाड मांस लोहू भरी मज्जा मेद अपार वे। इक मेद मज्जा बहुत तोमें चरम ऊपर लाइया। जा घरी हम होय न्यारे सबै देष घिनाइया॥ घिंन करै सब देष तोकों नाक मूंदै जनजनौ। सुंदर दास सुवास हमतें जीव कहै काया सुनौ ॥६॥ देह कहै सुन प्रानिया तेरे ठौर न ठांव वे। लेत हमरो आसरो धरत हमहिं

को नामवे ॥ तूं नाम कैसे धरत हमको वातये सुनिये एक वे ॥ जा हाँडीमें षाइ चलियो ताहि न करिये छेक वे ॥ अब छेक कीये नाहिं सोभा करी हमारी कानिया । सुंदरदास निवास हममें देह- कहै सुन प्रानिया ॥ ७ ॥ जीव कहै काया सुनौ मेरे ठोर अनंत वे । आयो थो इस कामकूं भजन करन भगवंत वे । भगवंत भजनें करन आयो प्रभू पठायो आप वे । पीछलि सुधि सबे विसरी भयो तोय मिलाप वे ॥ इक मिलै तोसौं कहा कासौं अंतराय पास्यौ घनौ । सुंदरदास विसास घातनि जीव कह काया सुनौ ॥ ८ ॥

छंद १.

हरिनामतें सुख ऊपजै मन छाँड आन उपाय रे। तन कष्ट करकर जो भ्रमैं तौ मरन दुःख न जाय रे॥ गुरु ग्यानको विश्वास गहि जिनि भ्रमैन दूजी ठौर रे। योग यज्ञ कलेस तप व्रत नाम तुलत न और रे॥ १॥ सब संत योंही कहतहैं श्रुति सुमृति ग्रंथ पुरान रे। दास सुंदर नामते गति लहै पद निरवान रे॥ २॥

छंद २.

सतसंग नितप्रति कीजियें मति होय निरमल सार रे। नित प्राणपतिसों ऊपजै अति लहे सुःख अपार रे॥ मुप नाम हरिको ऊचरे श्रवण सुने गुण गोविंद रे।

रट ररंकार अपंड धुनि तहां प्रगट पूरण चंदरे ॥ सतगुरु बिना न पाइये यह अगम उलटा षेल रे। कहै दास सुंदर देषतां हुय जीव ब्रह्महि मेल रे ॥

छंद ३.

लोकभेदको संग तजो रे साधुसमागम कीन। माया मोह जंजालतें हम भाग किनारा दीन ॥ नाम निरंजन लेत है रे और न कछु न सुहाइ रे। मनसा वाचा करमना सब छाँडि आन उपाइ रे ॥ पिंड ब्रह्मंड जहां तहां रे वा बिन और न कोइ रे। सुंदर ताका दास है जाते सब पेदासी होय रे ॥

छंद ४.

॥ रागवसंत ॥ ताल दीपचन्दी ॥

हम देष वसंत कियो विचार । यह माया षेले अति अपार ॥ टेर ॥ यह छिनछिन माहिं अनेक रंग । पुनि कहुँ विछुरे कहुं करै संग ॥ गुनधारि वैठे कपट भाय । यह आपुहि जनमें आप पाय ॥ १ ॥ यहु कहुं कामिनि कहूं भई कंत । कहं मारै कहुं दयावंत ॥ कहूं जागै कहुं रही सोय । यह कहूं हँसै कहुं उठैरोय॥२॥ यह कहूं पति कहुं भई देव । पुनि कहूं मुक्ति करि करै सेव ॥ कहूं मालन कहुं भई फूल ॥ कहूं सुक्षिम कहूं है स्थूल ॥ ३ ॥ यह तीन लोकमें रही

पूरि। भागि कहा कोइ जाय दूरि ॥ जो प्रगटे सुंदर ग्यान अंग। तो माया मृग-जल रज्जु भुजंग ॥ ४ ॥

पद १.

अथ आरती लिख्यते ॥ आरती कैसे करो गुसांई। तुमही व्यापि रहे सब ठांई॥ ॥ टेर ॥ तुमही कुंभ नीर तुम देवा ॥ तुमही कहित अलष अभेवा ॥ १ ॥ तुम-ही दीपक धूप अनूपा ॥ तुमही घंटानाद स्वरूपा ॥ २ ॥ तुमही पाती पुहुप प्रका-सा ॥ तुमही ठाकुर तुमही दासा ॥ ३ ॥ तुमही जलथल पावक पवना ॥ सुंदर पकारि रहै मुष मौना ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ होरी लिख्यते।

रागकाफी तालदीपचंदी।

नित आनंद मंगल होरी। शामसूं खेल सखीरी॥टेर॥सुषमण होरी खेलण निकसी ग्यान कुमकुमा घोरी। सुरतारि कर पि-चकारी रंग भर हरिके सनमुख डारी॥ पाप अब सबही भग्यो री॥१॥ किरपा कर मोय फगवा पगस्या रंग भर लीनी झोरी। हरिके सनमुष हुयकर पेलूं सुंदर भाग पुल्यो री॥ सबै मिल पेलो होरी॥२॥बहुत जनमकी भई दुहागण अबके सुहाग मिल्योरी। कहत कबीर अमर सुष विलसे सबदुष दूर भयोरी॥ सबै-मिल हरिकूं रटो री॥३॥ रसना भई

वेरण मोरी करै मनसूं मिल चोरी ॥ टेर ॥ हरिसूंवियोग कियो अलबेली विषरस मीठो लग्यो री। हरीबिन रैन वजरसी लगतहै तलफत भोर भयो री ॥ उठी तन ब्रिहकी होरी ॥ १ ॥ इकरसना दूजी मनसा नारी-दोय मिल द्वंद मच्यो री। निसिदिन फिरे विषे रस माती नगर उजाड करयो री ॥ मानी नहिं बोहोत कह्यो री ॥ २ ॥ कहे री सुरता सुण री सुमताओ तन जात भयो री। यातनकी अब होय फजीती सिरपर जम गरज्यो री। चौरासीमें भटक रयो री ॥ ३ ॥ एक पुरस ताके पांच सुंदरी यो घर जात रयो री ॥ मनसा नार फिरे डहे कांणी

खटरस चाख लियो ॥ आपसमें सोर मच्यो री ॥ ४ ॥ लडणेकूं आसूरी पूरी झूठी साष भरो री । नेह लग्यो हरामी छेलसूं प्रीत पाछली तोडी । ऐसी मतवारी गोरी॥५॥ अजहूँ चेत कछू नाहिं विगर्‍यो रसना राम कहोरी । सुषमण दास शरण सतगुरकी हरि सिवर्‍यो सो तिर्‍योरी । मेतो तेरे शरण पड्योरी ॥ ६ ॥

होरी २.

करुणानिधि अरज हमारी । राम सुण लीजो मुरारी ॥ टेर ॥ जनम मरणको पार न पायो औ दुख बोहोत बुरो री । हाथ जोड विनती करूं माधो संकट मेटो भारी ॥ राम शरणागत थारी ॥१॥

ध्रू प्रहलाद बिभीषण तार्यो तारी गोतम नारी । अजामेलसे अधम उधारे गनिकासी तुम तारी ॥ नाथ कहा ढील हमारी ॥ २ ॥ धना भगतवा जींद कबीरा नामदेव लियो उबारी । अनंत कोट प्रभु तार दिया है कहा तकसीर हमारी ॥ राम भूलो मत म्हारी ॥ ३ ॥ रूम रूम गुनेगार भर्यो हूं सूनी बोहोत विकारी । हमसे अधम पारकर किरता छीतमदास विचारी ॥ राम रंजछूमें तिहारी ॥ ४ ॥

प. ३ ममतारो भार तज दे रे ॥टेर॥ होनहार सो बणत आपही टाली नांय टले रे । मेंवडकी गठडी सिर धरके विरथाइ वोज मरे रे । रैनादिन सोच करै रे ॥ १ ॥

दिना चारको फाग वण्यो है काहेकुं मोद करै रे। आनंद घन विसरयो परमातम क्रोधाकि अगन जरै रे॥ दुखको सिंधु घुरै रे॥ २॥ समझ विचार गहे उर समता जाको काज सरै रे। धरमदास पहुँचे सुखसागर सतगुरु शरण रहे रे॥ फेर नहिं जनम धरै रे॥ ३॥

पद ४॥ राग चैती॥

कही रे जंजाल करे जिवाडा॥ टेर॥ कहो जिवडा जी थांने किण विलमाया। सुम तारे जावतां कुमता विलमाया॥१॥ जंजाल किया जिव जमपुर जावै। लष चौरासीमें गोता पावै॥ २॥ जंजाल किया जिव धरम न पावै। हाथ पकड

जम पैंच ले जावै ॥ ३ ॥ ओ संसार सुपनकी कहाणी। सुकरत सोदा करले रे प्राणी ॥ ४ ॥ सुकरत सुषको सागर कहिये। राम भजन चितमें धर लहिये ॥ ५ ॥ दिन दिन तोरी घटत आवरदा। राम भजन तूं तो करले रे वंदा ॥ ६ ॥ भजन कियां भव सुधरे थारो। अन्तसमै थारो होसी सुधारो॥७॥ गंगादासके सुतकी अरजी। चरणांमें चित राषो हरीजी ॥ ८ ॥

॥ अथ पंथीडा ॥

हरि भजले दिन दोय मानुष जनम मोसर मिल्यो। पंथी डारे थिर नाहिं दीसे कोय जाय सकल जग जावतो ॥

॥ टेर ॥ वेणा विषमी वाट दूर दिसावर जावणा । आमा ओघट घाट मोहनदी बिचमें वहै ॥ १ ॥ धारिया रहै धनधाम संग सजन चाले नहीं । कर सुकरतरा काम बिचमें हाट न वाणिया ॥ २ ॥ पूरब पुण्य प्रताप सुर दुरलभ नर तन मिल्यो । जपलीजे हरि जाप जनम अमोलक जातहै ॥ ३ ॥ वीर बडा संसार कुंभकरण रावण जिसा । विणसत लगी न वार अंत सिधाया एकला ॥ ४ ॥ जग सब चाल्यो जाय जिनुं बादल छाया वहै । गाय गाय हरि गाय विलम न कीजे बावरे ॥ ५ ॥ इण जगवास सराय आय आय नर ऊतरया । कोई

थिर न रहाय इक आवे इक जातहै ॥ ६ ॥ इण सरवररी तीर हंस बटाऊ पांवणा । पीले हरिरस नीर बहुरन इण सर आवणा ॥ ७ ॥ जन भावन इण वार कर सतसंगत साधुकी । आवा गवण निवार जनम मरण सहजां- मिटे ॥ ८ ॥

अथ लावणी देईदानजी री ।

मिल मिंत सयाना दरसण चालोनी देई दानजी ॥टेर॥ देई दान दयाके सागर दर सणसें अघ जाय । बडे भाग जो भेटे जिन के सफल जनम जग मायरे ॥ १ ॥ बिषै वासना छोड पौढते पृथिवी वस्त्र बिछाय । काली कंवल अंग लपेटे एक टंक जल

आर रे ॥ मिल० ॥ २ ॥ जंगलमें इक साल मायने निजकर गुफा वनाई। वैठ इकंत तपस्या करते जिनकी गम नहिं पाई रे ॥ मि० ॥ ३ ॥ ग्यान और विग्यान सोध कर जोग षूब अजमाया । धरै ध्यान थिर अषंड समाधी परमानंद मिल जाया रे ॥ मि० ॥४॥ कोई पदारथकी नहिं परवा करते परउपकार ।परब्रह्म पहिचाणा सावत जाणे जग जंजाल रे ॥ मि० ५ ॥ एसा साधू सिरे मातमा मिलै और नहिं तोय ।आप तिरै औरनकूं तारै इणमें संक नहिं कोय रे ॥ मि० ॥ ६ ॥ भगवत भगती करै भावसूं दवा नामकी देवै । कु-छरोग जडजाय सवी जो दृढ भरोसा

करलेवे रे ॥ मिल० ॥ ७ ॥ कहै सांम तज ऐसा फकड तीरथ धांम अनेक करे। जिग्य वो अज्ञ नजाने भगति दरसका लेष रे ॥ मिल० ॥ ८ ॥

अथ श्रीसेवारामजीरी लावणी।

जो धांणे माहीं संत हुवा हे सेवा रामजी ॥ टेर ॥ सतसंगत वे करी बोतसी गृस्तारंभ रे मांय। ग्यांन ध्यान भरपूर हुवो जब संजम लीनो पाया हो० ॥ १ ॥ भाउ गरूके चरणां लागा मनमें धीरज धार ॥ बैठ इकंतही ध्यान लगायो ममता माया मार हो० ॥ २ ॥ जात मेसरी मूंदडा सरे. साधू पूरा जांन। माता पिता पुतर अरु

नारी सबही विरथा जान हो० ॥ ३ ॥
कुटम कबीलो भेला हुयकर पीछा
घरकूं लाया । बतलाया मूढे नहिं
बोल्या राम नाम गुण गाया हो० ॥ ४ ॥
एक टंक वे पावै रसोई रागदेश कछु
नाहीं । राम कथा वे करे बोतसी भांत
भांत समझाई हो० ॥ ५ ॥ संमत उगणी
से साल तेसटे वैसाखवद पप माहीं।
चवदस बार सनीसरके दिन राम सभा
बिच गाई हो० ॥ ६ ॥ राम सभा मैं
हरिजस गायो सब मनमें हरकायो ॥
राम निरंजन कृपा करी जद गरीब
दास गुण गायो हो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ग्यानविलास ॥

॥ श्रीसुंदरदासजी कृत ॥

प्रथम श्रीगुरुदेवको अंग ।

॥ दोहा ॥

सुंदर सतगुरु बंदियै, सोई बंदन जोग ॥ औषध शब्दपिवायकर, दूर किया सब रोग ॥ १ ॥ सुंदर सतगुरु पलकमें, दूर करत अग्यान ॥ मन वच क्रम जिज्ञासु व्है। शब्द सुनै जो कान ॥ ॥ २ ॥ वेद महा बहु भेद है, जानै विरला कोय । सुंदर सो सतगुरु बिना, निरवारो नाहिं होय ॥३॥ परमातमसौं आतमा, जुद्रे रहे बहुकाल । सुंदर मेला कर दियो, सत

गुरु मिले दलाल ॥४॥ सत गुरु शुद्ध स्वरूप है, शिष्य देष गुरु देह ॥ सुंदर कारज किम सरै, कैसे वढै सनेह ॥५॥

सुमरनरो अंग—दोहा।

सुन्दर सतगुरु यूं कयो, सकल शिरोमन नाम ॥ ताकों निसदिन सुमरियें, सुष सागर सुषधाम ॥ १ ॥ रंक हाथ हीरा चढ्यो, ताको मोल अमोल । घर घर जो लै बेचते, सुंदर याही भोल ॥ २ ॥ काम नास जाके हिये, ताहि नवे सब कोय ॥ ज्यों राजाकी संकतें, सुंदर अति डर होय ॥ ३ ॥

साधु अंग—दोहा।

संत समागम कीजिये, तजिये और उपाय ॥ सुंदर वहुतहि ऊधरै, सत संगत

में आय ॥ १ ॥ सुरता जो हरि मिल-नकी, तो करिये सतसंग ॥ बिना परिश्रम पाइये, अविगत देव अभंग ॥ २ ॥ संत मुक्तिके पोरिया, तिनसों करियें प्यार ॥ कूंची उनके हाथ है, सुंदर पोलहिद्वार ॥ ३ ॥ सुंदर साधु दयाल हैं, कहैं ग्यान समुझाय ॥ पात्रविना नहिं ठार हैं, शब्द निकर वहिजाय ॥ ४ ॥ संतनके यह बन जहैं, निसिदिन ग्यानविचार ॥ ग्राहक आवे लेनकूं, ताहीके दातार ॥ ५ ॥

आत्माविछोह अंग—दोहा।

देह सुरंगी तब लगे, जबलग प्राण समीप ॥ जीव जोति जाती रही, सुंदर बदरँग दीप ॥ १ ॥ सुंदर देह

परी रही, निकस गये जब प्राण। सबकोई यूं कहतहैं, अब लेजाहु मसान ॥ २ ॥ सुंदर लोक कुटुंब सब, रहते सदा हजूर ॥ प्राणगये लागे कहन, काढो घरतें दूर ॥ ३ ॥ चेतनतें चेतन भई, अतिगति सोभत देह ॥ सुंदर चेतन निकसतें, भई षेहकी षेह ॥ ४ ॥

उपदेश चिंतवन अंग–दोहा।

सुंदर मानुष देहकी, महिमा बरने साध ॥ जामैं पैयें परमगुरु, अविगत देव अगाध ॥ १ ॥ सुंदर मनुषा देहकी, महिमा कहिये काय ॥ जाकों बंछे देवता, तूं क्यूं षोवे ताय ॥ २ ॥ सुंदर साँची कहत हूं, मति आने कछु रोस ॥ जोतें षोयो

रतन यह, तो तोहीको दोस ॥ ३ ॥ बारबार नहिं पाइयें, सुंदर मनुषा देह ॥ रामभजन सेवा सुकृत, यह सौदाकर लेह ॥ ४ ॥ सुंदर मनुषा देह यह; तामें दोय प्रकार ॥ यातें बूडे जगतमें, यातें उतरे पार ॥ ५ ॥

कालचिंतवन अंग-दोहा।

कालग्रसतहै बावरे, चेतत क्यों न अजान । सुंदर काया कोटमें, क्यों हूवो सुलतान ॥ १ ॥ सुंदर काल महाबली, मारें मोटे मीर ॥ तुहै कोनकी गिनतमें, चेतत काहे न वीर ॥ २ ॥ मेरे मंदिर माल धन, मेरो सकल कुटुंब ॥ सुंदर जिहुंको तिहुंरयो, समलोक आडंब ॥ ३ ॥

सोरठा।

शिव डरियो कैलास, विष्णु डर्‌यो वैकुंठमें ॥ सुंदर मानी त्रास, इंद्र डर्‌यो अमरावती ॥ ४ ॥

दोहा।

काल दियो जब बंधही, देवलोक सब देव ॥ सुंदर डर्‌यो कुवेर पुनि, देप सबनको छेव ॥ ५ ॥ एकरहे करता पुरुष, महाकालको काल ॥ सुंदर वह विनसे नहीं, जाको यह सब ख्याल ॥ ६ ॥

तृष्णा अंग-दोहा।

पलपल छीजे देह यह, घटत घटत घटजाय ॥ सुंदर तृष्णा ना घटे, दिनदिन

नौलन माय ॥ १ ॥ नितनित डोले ताकती, सुरग मिरत पाताल ॥ सुंदर तीनूं लोकतें भरयो नराको गाल ॥ २ ॥ सुंदर तृष्णा करत हैं, सबकों बांधि गुलाम ॥ हुकुम करैं त्यांही चले, गिनत सीत नाहिं घाम ॥ ३ ॥ सुंदर तृष्णाके लिये, पराधीन हुय जाय ॥ दुःसह वचनानि कों सहै, यो परहाथ विकाय ॥ ४ ॥

देहमलीन अंग-दोहा ।

सुंदर देह मलीन अति, बुरी वसत को भौन ॥ हाड मांस को कोथरा, भली कहे तिहि कौन ॥ १ ॥ सुंदर पंजर हाडको, चाम लपेटयो ताहि ॥ तामें बैठो फूलिके, मो समान को आहि ॥ २ ॥ सुंदर न्हावे

वहुतही, वहुत करे आचार ॥ देहमाहिं देषे नहीं, भरयो नरक भंडार ॥ ३ ॥

आधीन उराहनेको अंग-दोहा।

देह रच्यो प्रभुभजनको, सुंदर नख सिख साज॥ एक हमारी वातसुन, पेट दियो किहिं काज ॥ १ ॥ श्रवन दिये जस सुननको, नैन देषने संत॥ सुंदर शोभित नासिका,मुख शोभनको दंत॥२॥ और ठौर मन काढिके, करि है तुमरी भेंट। सुंदरक्यों करि छूटियें, पाप लगायो पेट ॥ ३॥ कूप भरे वापी भरे, पूरिभरे जल ताल ॥ सुंदर पेट न क्यूं भरे, कौन वनायो ख्याल ॥ ४ ॥ सुंदर प्रभुजी पेटकी,

चिंता दिन अरु रात ॥ सांझ खायकर सोइये, बहुरि लगे परभात ॥ ५ ॥

विश्वास अंग-दोहा ।

सुंदर तेरे पेटकी, तोकूं चिंता कून ॥ विश्वभरन भगवंतहैं, पकर बैठ तूं मून ॥ ॥ १ ॥ सुंदर चिंता मत करे, पाँव पसारे सोय । पेट कियोहै जिन प्रभु, ताको चिंता होय ॥ २ ॥ जलचर थलचर व्योमचर, सबकूं देत अहार ॥ सुंदर चिंता जिन करे, निसिदिन बारंवार ॥ ॥ ३ ॥ सुंदर प्रभुजी देतहैं, पाहनमें पहुँचाय ॥ तूं अब क्यूं भूखो रहे, काहेकूं बिललाय ॥ ४ ॥

दुष्टअंग दोहा।

घर षोवतहै आपनो, औरनहूको जाय॥ सुंदर दुष्ट स्वभाव यह, दोऊं देत वहाय॥ ॥१॥ दुरजन संग न कीजिये, सहियें दुःख अनेक। सुंदर सव संसारमें, दुष्ट समान न एक॥ २॥ गजमारे तो नाहिं दुप, सिंह करे तन भंग॥ सुंदर ऐसो दुप नहीं, जैसो दुरजन संग॥ ३॥ सुंदर दुरजन सारिषा, दुषदायक नाहिं और। स्वरग मृत्यु पाताल हम, देपे सव ढंढोर॥ ४॥ सुंदर दुरजनको वचन, दुःसह सह्यो न जाय। सहे सु विरले संतजन, जिनके राम सहाय॥ ५॥

मन अंग–दोहा ।

मनकों राषत हटक करि, सटकि चहूँ-दिशि जाय, सुंदर लट कुर लालची, गटकि विषयफल षाय ॥ १ ॥ पलहीमें मरजात मन, पलमें जीवत सोय ॥ सुंदर पारा मुरिछिकें, बहुरि सजीवन होय ॥ ॥ २ ॥ साधत साधत दिनगये, करहिं ओरकी ओर ॥ सुंदर एक विचार बिन, मन नाहिं पावे ठोर ॥ ३ ॥ सुंदर यह मन रंक है, कबहुँ होय मन राव ॥ कबहूं टेढो ह्वै चलै, कबहूं सूधे पाँव ॥ ४ ॥ पाप पुण्य मैंने किये, स्वरग नरकहौं जाउं । सुंदर सब कछु मानिले, याहीतें मन नाउं ॥ ॥ ५ ॥ मनको साधन एकहै, निसिदिन

ब्रह्मविचार ॥ सुंदर ब्रह्म विचारतें, ब्रह्म होत नाहिं वार ॥ ६ ॥ देहरूप मन ह्वै गयो, कियो देह अभिमान ॥ सुंदर समुझो आपको, आप होय भगवान ॥ ७ ॥

सूरातन अंग–दोहा।

सुंदर सोई सूरमा, लोटपोट ह्वै जाय ॥ ओट कछू राषे नाहिं, चोट मुँह पर षाय ॥ १ ॥ सुंदर शील सनाह करि, तोष दियो सिर टोप ॥ ग्यान षडग पुनि हाथ करि, कियो जु मनपर कोप ॥ २ ॥ मारे सब संग्राम करि, पिशुनहुते घटमाहिं। सुंदर कोई सूरमा, साधु बराबर नाहिं ॥ ३ ॥ सुंदर निशिदिन

साधके, मन मारनकी मूठ ॥ मनके आगे भाजके, कबहुँ न देवै पूठ ॥ ४ ॥

वचनविवेक अंग–दोहा ।

सुंदर तबही बोलिये, समझ हियेमें पैठ ॥ कहिये बात विवेककी, नाहिं तर चुपव्है बैठ ॥१॥ सुंदर मौन गहे रहे, जान सके नहिं कोय ॥ बिन बोले गरुवा रहे, बोले हरुआ होय ॥२॥ सुंदर वेही बोलिये, जा बोलेमें ढंग ॥ नातर पशु बोलत सदा, कौन स्वाद रसरंग ॥ ३ ॥ सुंदर वचन कुवचनमें, रात दिवसको फेर ॥ सुवचन सदा प्रकाशमय, कुवचन सदा अँधेर ॥ ॥ ४ ॥ जा बानीमें पाइये, भक्ति ज्यान

वैराग ॥ सुंदर ताकों आदरे, और सकलकों त्याग ॥ ५ ॥

निजभाव अंग-दोहा।

सुंदर अपनो भावहै, जो कछु दीसै आन॥ बुद्धियोग विभ्रम भयो, दीऊं ग्यान अग्यान ॥ १ ॥ अपनी छाया देपकर, कूकर जाले आन ॥ सुंदर अतहीं जोर कर, भूंसि मरतहै श्वान ॥ २ ॥ सिंह कूपमें आयके, देपै अपनी छांय, सुंदर जान्यो दूसरो, बूडि मन्यो तामाँय ॥ ३ ॥ फटिक सिलासों आयके, कुंजर तोरै दंत। आगे देपे और गज, सुंदर आगि अनंत ॥ ४ ॥ सुंदर याकों ऊपजै, काम

क्रोध अरु मोह ॥ याहीकों है मित्रता, याहीकों है द्रोह ॥ ५ ॥

स्वरूपविस्मरण अंग-दोहा ।

सुंदर भूल्यो आपको, षोई अपनी ठौर ॥ देह मांय मिल देहसो, भयो औरको और ॥१॥ ज्योंमणिकाहूं कंठमें ढूँढत पावै नाहिं ॥ पूछत डोलत औरकों, सुंदर आपहि माहिं ॥ २ ॥ सुंदर चेतन आप यह, चालत जडकी चाल । ज्यों लकड़ीके अश्व चढि, कूदत डोलत बाल ॥ ३ ॥ भूतनिमाहीं मिलरह्यो । तातें होतहि भूत । सुंदर भूल्यो आपको, उर-झानो मनसूत ॥ ४ ॥

सांख्य अंग—दोहा।

सुंदर सांख्य विचार करि, समुझे अपनो रूप, नहिं तो जडके संगते, बूडतहै भ्रम कूप ॥ १ ॥ मायाके गुन जड सबै, आतम चेतन जान, सुंदर सांख्य विचार करि, भिन्नाभिन्न पहिचान ॥ २ ॥ पंचतत्त्वकी देह जड, सब गुन मिलि चौबीस ॥ सुंदर चेतन आतमा, ताही मिले पचीस ॥ ॥ ३ ॥ देहरूपही व्है रह्यो, देह आपको मानि ॥ ताहीतें यह जीवहै, सुंदर कहत वषानि ॥ ४ ॥ देह भिन्न हौं भिन्नहूं, जब यह करै विवेक ॥ सुंदर जीवन पाइये, होय एकको एक ॥ ५ ॥ क्षीण सुपुष्ट शरीर है, शीत उष्णतिहि लार ॥ सुंदर जनम जरा-

लगे, यह षट देह विकार ॥ ६ ॥ क्षुधा तृषा गुन प्रानके, शोक मोह मन होय ॥ सुंदर साखी आतमा, जाने विरला कोय ॥ ७ ॥ जाकी सत्ता पायकर, सबगुन व्है चैतन्य ॥ सुंदर सोई आतमा, तुम जिन जानो अन्य ॥ ८ ॥

विचारअंग—दोहा ।

सुंदर साधन सब किये, उपज्यो हिये विचार ॥ श्रवन मनन निदध्यास पुनि, याही साधन सार ॥ १ ॥ सुंदर यह साधन विना, दूजो नहीं उपाय ॥ निशिदिन ब्रह्म विचारतें, जीव ब्रह्म व्है जाय ॥ २ ॥ दधिमथि घृतकूं काढिकै, देत तक्रमें डारि ॥ सुंदर वहुरि मिलै नहीं, ऐसे लेहु

विचारि ॥ ३ ॥ सुंदर ब्रह्म विचारहै, सब साधनको मूल ॥ याहीमें आये सकल, डाल पात फल फूल ॥ ४ ॥ सूतो जीव नरेश यह, सुषसेज्यापर आय ॥ बढी अविद्या नींदमें, सुंदर अतिसुष पाय ॥ ॥ ५ ॥ आयोकरम षवास चल, नृपति जगावनहेत ॥ सुंदरदानी फूटपारि, अति गतिभयो अचेत ॥ ६ ॥ देषे भगतिप्रधा-न जब, राजा जाग्यो नाहिं ॥ सुंदर संका करिनहीं, पकरझंझेरी बाहिं ॥७॥ तबउठकर बैठोभयो, बहुरिजँभाईपात ॥ सुंदर कियो विचार जब, तब जाग्यो साक्षात ॥ ८ ॥

आतमानुभव अंग-दोहा।

सुषतैं क्यों न जातहै, अनुभव को आनंद ॥ सुंदर समुझै आपको, जहां न कोई द्वंद्व ॥ १ ॥ सुंदर जैसे शर्करा, गूँगे षाई होय ॥ मुषतैं कहि आवे नहीं, काँपपि दावे सोय ॥ २ ॥ रवि शशि तारा दीपगन, हीरा होय अनूप ॥ सुंदर इनके तेजतैं, दीसे इनको रूप ॥ ३ ॥ त्यों आतमके तेजतैं, आतम करै प्रकाश। सुंदर इंद्रिय जड सबै, कोइ न जानै तास ॥ ४ ॥ सुंदर साधन सब करै, कहै मुगतिमें जाहिं ॥ आतमके अनुभव बिनां, और मुक्ति कहु नाहिं ॥ ५ ॥ दूर करै सब वासना, आशारहे न कोय ॥

वाही सुंदर मुक्तिहै, जीवतहीं सुपहोय॥
॥ ६ ॥ श्रवन ग्यानहै तवलगै, शब्द सुनै चितलाय ॥ सुंदर माया जलपरै, पावक ज्यों वुझजाय ॥ ७ ॥ मनन ग्यान नाहिं जातहै, ज्यों विजुरी उद्योत ॥ माया जल वरषत रहै, सुंदर चमका होत ॥ ८ ॥ निदिध्यासहैं ग्यान पुनि, वडवा अनल समान ॥ माया जलभक्षण करै, सुंदर यह हैरान ॥ ९ ॥ आतम अनुभव ग्यान है, प्रलयकालकी अंच ॥ भस्म करै सव जारिकै, सुंदर द्वैत प्रपंच ॥ ॥ १० ॥ नित्य कहत गुरु आतमा सोहै शवद प्रमान ॥ जैसें व्यापक व्यो-मह, सुंदर यह उपमान ॥ ११ ॥ जाकी

सत्ता इंद्रियनी, यह कहियें अनुमान ॥ सुंदर अनुभव आतमा, यह प्रतक्ष परमान ॥ १२ ॥ सुंदर तत्त्व जुदे जुदे, राख्यो नाम शरीर ॥ ज्यों कदलीके खंभलौं, कौन वस्तुहै वीर ॥ १३ ॥ हैं सो सुंदरहैं सदा, नाहिं सो सुंदर नाहिं ॥ नाहिं सो परकट देषियें, हैं सो लहिये नाहिं ॥ १४ ॥

ग्यानीको अंग–दोहा।

सुंदर ग्यानी जगतमें, विचरै सदा अलिप्त। ए गुन जानै देहके, भूखे रहैं के तृप्त ॥ १ ॥ निंदा स्तुतिहै देहकी, करम शुभाशुभ देह ॥ सुंदर ग्यानी ग्यानमय, कछुह न जानें एह ॥ २ ॥

अज्ञ क्रिया सव करतहै, अहंवुद्धिको आन ॥ सुंदर ग्यानी करतहै, अहंकार विन जान ॥ ३ ॥ सुंदर अज्ञरु तज्ञके, अंतरहैं वहु भांत ॥ वाके दिवस अनूपहै, वाहि अँधेरी रात ॥ ४ ॥ सुंदर ग्यान प्रकाशतें, धोखा रहे न कोय ॥ भावै घर भीतर रहैं । भावै वनमें होय ॥ ५ ॥

अथ ग्रंथविवेकचिंतामणिः ।

चौपाई ।

आप निरंजन है अविनासी । जिन यह वहुविधि सृष्टि प्रकासी ॥ अव तूं पकर उसीका सरना । समझ देप नि- सचै कर मरना ॥ १ ॥ जो तूं जनम जगतमें आया । तो तूं करलै इहै उपाया

निसि दिन राम नाम उच्चरना । समझ देख निसचै कर मरना ॥ २ ॥ माया मोह माहिं जिनि भूल । लोग कुटुंब देख मत फूलै ॥ इनके संग लाग क्या जरना । समझ देख निसचै कर मरना ॥ ३ ॥ मात पिता बंधव किसके रे । सुत दारा कोऊ नहिं तेरे । छिनकमाहिं सबसों वीछरना । समझ देष निसचै कर मरना ॥ ४ ॥ अपने अपने स्वारथ लागे तूं मति जाने मो सँग पागे ॥ इनकों पहिले छोडि निसरना । समझ देष निसचै कर मरना ॥ ५ ॥ जिनके हेत दसौंदिसि धावै । कोऊ तेरे संग न आवै ॥ धामधूम धंधा परि हरना । समझ

देख निसचै कर मरना ॥ ६ ॥ गृहको दुःख न वरन्यो जाई। मानहु अग्नि चहूँ दिसिलाई॥ तामें कहुं कैसी विधिठरना। समझ देष निसचै कर मरना ॥ ७ ॥ करनाहै सो कराकि न लेहू। पीछै हम कों दोस न देहू ॥ एक दिन पाँव पसारि तु लरना। समझ देप निसचै कर मरना ॥ ८ ॥ या शरीरसौं ममता कैसी। याकी तो गत दीसत ऐसी ॥ ज्यों पालाका पिंड पघरना। समझ देष निसचै कर मरना ॥ ९ ॥ मृत्यु पकारिकै सबनि हलावै। तेरी बारी नेडी आवै ॥ जैसे पात वृछसै छरना। समझ देप निसचै कर मरना ॥ १० ॥ दिनादिन छीन होतहैं

काया। अंजलिमें जल किन ठहराया। ऐसे जान वेग निस तरना। समझ देष निसचै कर मरना॥ ११॥ देह षेह मांहे मिलि जाई। काग श्वान कै जंतु कषाई॥ तेल फुलेल कहा चोपरना। समझ देष निसचै कर मरना॥ १२॥ षंड विहंड काल तन करिहै। संकट महा एक दिन परिहै। चाकी माहीं मूंग ज्यों दरना। समझ देष निसचै कर मरना॥ १३॥ काहेकों कछु मनमें धारै। मौतसु तेरी वोरि निहारै॥ वाला गिनै न बूढा तरना। समझ देष निसचै कर मरना॥ १४॥ साँपगहै मूसाकों जैसे। मंझारी सूवाकों तैसे॥ ज्यूं तीतरकों वाज विथुरना। समझ

देष निसचै कर मरना ॥ १५ ॥ बोक निलज्ज चरत नित डोलै। बकरी संग काम रत बोलै॥ पकर कसाई पटक पिछरना। समझ देष निसचैकर मरना ॥ १६ ॥ काल पड़ा सिर ऊपर तेरे। तूं किउँ गाफल उत इत हेरे ॥ जैसें बधिक हतै ताकि हरना। समझ देप निस-चैकर मरना ॥ १७ ॥ क्षणभंगुर यह तन है ऐसा। काचा कुंभ भरचा जल जैसा ॥ पलक माय बैठेही ठरना। समझ देप निसचै कर मरना ॥ १८ ॥ जोरि जोरि धन भरे भँडारा। अरव परव कछु अंत न पारा ॥ फोपी हांडी हाथ पकरना। समझ देप निसचै कर मरना ॥ १९ ॥

हीरा लाल जवाहिर जेते । मानक मोती घरमें केते ॥ धर्‌यारहे रूपा सौवरना । समझ देष निसचै कर मरना ॥ २० ॥ रीता आया रीता जाई । उहै भली जो परची पाई ॥ माया संचि संचि क्या करना । समझ देष निसचै कर मरना ॥ ॥ २१ ॥ देश विलायत घोरा हाथी । इन में कोउ न तेरा साथी ॥ पीछै रहै है हाथ मसरना । समझ देष निसचै कर मरना ॥ ॥ २२ ॥ मंदिरमाल छोड सब जाना । होय बसेरा बीच मसाना ॥ अंबर पोढन भूमि पथरना । समझ देष निसचै कर मरना ॥ २३ ॥ वहुविधि संत गहतहै टेरै । जमकी मार परै सिर तेरै ॥ धरमरायकूं

लेषा भरना, समझ देष निसचै कर मरना ॥ २४ ॥ पाप पुण्यका व्यौरा माँगै। कागद निकसै तेरे आगै ॥ रतीरतीका वेहै निरना। समझ देष निसचै कर मरना ॥ २५ ॥ कंटक ऊपर चलिहै भाई। तातें थंभनसों लपटाई ॥ ऐसी त्रास जान अतिडरना। समझ देष निसचैकर मरना ॥ २६ ॥ कहूं काहू दुःख न दीजे। अपनी घात आप क्यूं कीजे ॥ वारवार चौरासी फिरना। समझ देष निसचै कर मरना ॥ ॥ २७ ॥ जो वो हे लुनियेगा सोई। अमृत षाय किम विषफल होई ॥ इहै विचार असुभसूं टरना। समझ देष निश्चैकर मरना ॥ २८ ॥ वेद पुराण कहै समुझावै।

जैसा करै सु तैसा पावै । तातें देष देख पग धरना । समझ देष निसचैकर मरना ॥ ॥ २९ ॥ भोजन करै तृपतिसो होई । गुरु-शिष्या भावै किन कोई ॥ अपनी करनी पार उतरना । समझ देष निश्चैकर मरना ॥ ३० ॥ काम क्रोध वैरी घटमाहीं । और कोऊ कहां वैरी नाहीं ॥ रातदिवस इसहीसों लरना । समझ देष निसचैकर मरना ॥ ३१ ॥ मनका दंड बहुत विधि दीजै । योही दगाबाज वश कीजै ॥ और किसीसेती नाहिं अरना । समझ देष नि-श्चैकर मरना ॥ ३२ ॥ जिनके राग द्वेष कछु नाहीं । ब्रह्म विचार सदा उरमाहीं ॥ उन संतनका गहियें सरना । समझ देष

निश्चैकर मरना ॥ ३३ ॥ काचा पिंड रहत नहिं दीसै। यह हम जानी बिसवावीसै ॥ हरिसुमिरन कबहूं न विसरना। समझ देष निश्चैकर मरना ॥ ३४ ॥ जो तूं स्वरगलोक चलिजावै। इंद्रलोकूं पुनि रहन न पावै ॥ ब्रह्माहूके घरतै गिरना। समझदेष निसचैकर मरना ॥ ॥ ३५ ॥ गरब न करिये राजा राना। गये बिलाय देव अरु दाना ॥ तिनकै कहूं षोजहू षुरना। समझ देष निसचै कर मरना ॥ ३६ ॥ धरतीमापी एक डग क-रते। हाथों ऊपर परबत धरते ॥ केते गये जाय नहिं बरना। समझदेख निसचैकर मरना ॥ ३७ ॥ आसन साध पवन पुनि

पीवै । कोट वरस लग काहे न जीवै ॥ अंते तज तिनका घट परना । समझदेष निश्चैकर मरना ॥ ३८ ॥ कंपै धर जल अगनि समंदा । वायु व्योम तारागन चंदा ॥ कंपै सूर गगन आभरना । समझदेष निश्चैकर मरना ॥ ३९ ॥ जुदा न कोई रहनै पावै । होय अमर जो ब्रह्म सवावै ॥ सुंदर और कहूं न उबरना । समझदे० ॥ ४० ॥

॥ श्रीः ॥

अथ मन्त्रयोग।

साधु श्रीसुन्दरदासजी महाराजकृत सर्वांगयोगसूं उद्धृत।

चौपाई।
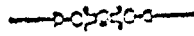
मंत्रयोग अब सुनियहु भाई। सत-गुरु बिना न जान्यो जाई॥ जाके कछू रूप नहिं रेषा। कौन प्रकार जाय सो देषा ॥ १ ॥ सब संतन मिल कियो विचारा। नाव विना नहिं लगे पियारा॥ कहू न दीसै ठौर न ठाऊं। ताको धरहि कौन विधि नाऊं ॥ २ ॥ अपने सुखके कारन दासा। काढ्यो सोध सु परम

प्रकासा ॥ ताको नाम राम तब राख्यो । पीछै विविधभाँति बहु भाख्यो ॥ ३ ॥ सहसनामकी कौन चलावै । नाम अनंत पार को पावै ॥ राम मंत्र सबके सिर मोरा । ताहि न कोई पूजन ओरा ॥ ४ ॥ राममंत्र सबमांहि ततसारा । और आहि जगके व्योहारा ॥ राममंत्रसे सिला तिरानी । पत्थर कहां तिरै कहुँ पानी ॥ ५ ॥ राम मंत्रके ऐसे कामा । पत्र न उठ्यो लिख्यो जब नामा ॥ राम मंत्र शिव गौरि सुनायो सोई नारद ध्रुवहि पढायो ॥ ६ ॥ पुनि प्रह्लाद गह्यो सोइ मंत्रा । सही कसोटी काढे जंत्रा ॥ जरे न मरे षड्गकी धारा । राम मंत्रके यह उपकारा ॥ ७ ॥ सुगम

उपाय और सद रोजी। राम मंत्रको जो
ले षोजी ॥ प्रथम श्रवन सुन गुरुके पासा।
पुनि सो रसना करै अभ्यासा ॥ ८ ॥ ता
पीछै हिरदैमें धारै। जिभ्या रहित मंत्र
उच्चारै ॥ निसिदिन मन तासौं रहे लागो।
कबहूं नेक न टूटे धागो ॥ ९ ॥ पुनि तहां
प्रगट होय ररकारा। आपहि आप अपं-
डित धारा ॥ तन मन बिसरि जाय तहँ
सोई। रोमहि रोम राम धुनि
होई ॥ १० ॥ जैसे पानी लून मिलावै।
ऐसे धुनि महि सुरत समावै ॥ राममं-
त्रका यह परकारा। करै आपसैं लगै
न वारा ॥ ११ ॥

दोहा ।

मंत्रयोग इहि विधि करो, जे कोइ चाहै राम ॥ सतगुरुके परसादतैं, मन पावे विसराम ॥ १२ ॥

अथ ग्रंथविविधअंतःकरण भेद ।

चौपाई ।

प्रश्न–कौन बहिर्मन कहिये स्वामी । अंतरमन कहि अंतरजामी ॥ कौन परममन कहिये देव । सुंदर पूछत मनको भेव ॥ १ ॥

उत्तर–उहै बहिरमन भ्रम तन थाके । इंद्रिय द्वार विषै सुप जाके ॥ अंतर मन यों जानैं कोहं । सुंदर ब्रह्म परममन सोहं ॥ २ ॥

प्रश्न—वहिरबुद्धि अव कहो गुसांई। अंतरबुद्धि रहै किहिं ठांई॥परमबुद्धि का कहौ विचारा। सुंदर पूछै शिष्य तुमारा ॥ ३ ॥

उत्तर—वहिरबुद्धि रजतम गुण रक्ता। अंतरबुद्धि सत्व आसक्ता ॥ परमबुद्धि त्रयगुणतैं न्यारी ॥ सुंदर आतम बुद्धि विचारी ॥ ४ ॥

प्रश्न—वहिरश्चित्त कैसे पहिचानै। अंतराचित्त कवनविधि जानै ॥ परमाचित्त कैसे करि कहिये। सुंदर सतगुरु विन नाहिं लहिये ॥ ५ ॥

उत्तर—वहिरश्चित्त चितवै अनेकं। अंतरचित्त चितवन एकं ॥ परमाचित्त

चितवन नाहिं कोई। चितवन करत ब्र-
ह्ममय होई॥ ६॥

प्रश्न–बहिर अहं सु कौन प्रकारा।
अंतः अहं कौन निरधारा॥ परम अहं
कैसे करि पइये। सुंदर सतगुरु मोय ल-
पइये॥ ७॥

उत्तर–बहिर अहं देह अभिमानी।
चार वरण अंत्यजलौं प्रानी॥ अंतः अहं
कहै हरिदासं। परम अहं हरि स्वयं
प्रकासं॥ ८॥ चतुष्ट अंतहकरण सुनाये।
त्रिधाभेद सतगुरुतें पाये॥ यह नीके
कर समुझौ प्रानी। सुंदर नौ चौपाइ
वखानी॥ ९॥

ॐ

अथ गुरुमहिमा अष्टक ।

दोहा ।

परमेश्वर अरु परमगुरु, दोनूं एक समान । सुंदर कहत विशेष यह, गुरुते पावे ग्यान ॥ १ ॥ दादू सतगुरुके चरण, वंदत सुंदरदास ॥ तिनकी महिमा कहत हूं, जिनतें ग्यानप्रकास ॥ २ ॥

भुजंगप्रयात छन्द ।

प्रकाशस्वरूपं हिरदेब्रह्मज्ञानं । सदा चार येही निराकार ध्यानं ॥ निरीहं निजानंद जानो जुगादू । नमो देव दादू नमो देव दादू ॥ ३ ॥ अछेदं अभेदं

अनंतं अपारं । अगाधं अबाधं निराधार सारं ॥ अजीतं अभीतं गहेहैं समादू । नमो देव दादू नमो देव दादू ॥ ४ ॥ हते काम क्रोधं तजे काल जालं । भगे लोभ मोहं गये सरव सालं ॥ नहं द्वंद्व कोऊ डरेहैं यमादू । नमो देव दादू नमो देव दादू ॥ ५ ॥ गुणातीत देहादि इंद्री जहालं । किये सर्वसंहार वैरी तहालं ॥ महा सूर वीरं नहीं को विषादू नमो देव दादू नमो देव दादू ॥ ६ ॥ मनो काय वाचं तजे हैं विकारं । उदै भान होतं गयो अंधकारं ॥ अजोनी अनायास पाये अनादू, नमो देव दादू नमो देव

दादू ॥ ७ ॥ क्षमावंत भारी दयावंत ऐसे, प्रमाणीक आगे भये संत जैसे ॥ गह्यो सत्य सोई लह्यो पंथ आदू । नमो देव दादू नमो देव दादू ॥ ८ ॥ किये आप आपे वडे तत्त्व ग्याता । वडी मौज पाई नहीं पक्षपाता ॥ वडी बुद्धि जाकी तज्यो है विवादू । नमो देव दादू नमो देव दादू ॥ ९ ॥ पढै याहि नित्यं भुजंगप्रयातं । लहै ज्ञान सोई मिलै ब्रह्म तातं ॥ मनोकामना सिद्धि पावै प्रसादू । नमो देव दादू नमो देव दादू ॥ १० ॥

दोहा ।

परमेश्वरमें गुरु वसै, परमेश्वर गुरुमाहिं ॥ सुंदर दोनूं परसपर, भिन्न भाव कछु नाहिं ॥ ११ ॥ परमेश्वर व्यापक सकल, घटधारे गुरु देव । सब घटकूं उपदेश दे, सुंदर पावे भेव ॥ १२ ॥

अथ गुरुग्यानउपदेशअष्टक ।

दोहा ।

दादू सतगुरु शीशपर, उरमें जिनको नाम । सुंदर आये शरण तकि, तिनपाये निज धाम ॥ १ ॥ वहेजात संसारमें, सतगुरु पकडे केश ॥ सुंदर काढे डूबते, दे अद्‌भुत उपदेश ॥ २ ॥

हरिगीत छंद ।

उपदेश श्रवण सुनाय अद्भुत हिरदे ग्यान प्रकाशियो ॥ चिरकालको अग्यान पूरण सकल भ्रम तम नाशियो ॥ आनंद दायक पुनि सहायक

करत जन निसकाम है ॥ दादू दयाल प्रसिद्ध सतगुरु ताहि मोरी प्रणामहै ॥ ३ ॥

दोहा ।

सुंदर सतगुरु हाथमैं, करडी लई कमान ॥ मारथा खैंचिक शीशपर, वचन लगाये बान ॥ ४ ॥

हरिगीत छंद ।

जिन बचन बान लगाय उरमैं मृतक फेर जिवाइया ॥ मुख द्वार होय उचार करि निज सार अमृत पाइया ॥ अत्यंत करि आनंदमैं हम रहत आठूं जामहै ॥ दादू दयाल प्रसिद्ध सतगुरु ताहि मोर प्रणामहै ॥ ५ ॥

दोहा।

सुंदर सतगुरु जगतमें, परउपकारी होय॥ नीच ऊंच सब उद्धरै, शरण जु आवै कोयं॥ ६॥

हरिगीत छंद।

जो आय शरणहि होय प्रापत ताप तिन तनकी हरै॥ पुनि फेर. बदले घाट उनको जीवतें ब्रह्महि करै॥ कछु ऊंच नीच न दृष्टि उनके सकलको बिसराम है॥ दादू दयाल प्रसिद्ध सतगुरु ताहि मोरी प्रणाम है॥ ७॥

दोहा।

सुंदर सतगुरु सहजमें, किये सु

पहिली पार ॥ और उपाय न तरिसके, भवसागर संसार ॥ ८ ॥

हरिगीत छंद ।

संसारसागर महास्तदुर ताहि कहु अव क्यूं तरै ॥ जो कोटि साधन करै कोऊ वृथाही पचपच मरै ॥ जिन विन परिश्रम पारकिये प्रगट सुखके धामहै ॥ दादू दयालु प्रसिद्ध सतगुरु ताहि मोर प्रणामहै ॥ ९ ॥

दोहा ।

सुंदर सतगुरु यूं कहै, याही निसचै आन ॥ जो कछु सुनिये देखिये, सरब सुपनकर जान ॥ १० ॥

हरिगीत छंद ।

यह सुपन तुल्य दिखाय दीयो स्व-रग नरक उभय कहै ॥ सुख दुःख हरप विषाद पुनि मानापमानहि सब गहै ॥ जिन जाति कुल अरु वरण आश्रम, कहत मिथ्या नामहै ॥ दादू दयाल प्रसिद्ध सतगुरु ताहि मोर प्रणाम है ॥ ११ ॥

दोहा ।

सुंदर सतगुरु यूं कहै, सत्य कछू नहिंरंच ॥ मिथ्या माया विस्तरी, जो कछु सकल प्रपंच ॥ १२ ॥

हरिगीत छंद।

उपज्यो प्रपंच अनादिको यह महा माया विसतरी ॥ नानात्वव्है करि जगत भास्यो बुद्धि सबहनकी हरी ॥ जिन भरम मिटाय दिखाय दीनों सरब व्यापक रामहै ॥ दादू दयाल प्रसिद्ध सतगुरु ताहि मोर प्रणामहै ॥ १३ ॥

दोहा।

सुंदर सतगुरु यूं कहैं, भ्रमतें भासे और ॥ सीपमाहिं रूपो दशै, सरप रज्जुकी ठौर ॥ १४ ॥

हरिगीत छंद।

रज्जुमही ज्यूं सरप भासे सीपमें रूपो यथा ॥ मृगतृषा जल मत देख

ही सो विश्व मिथ्याहै तथा ॥ जिन लह्यो ब्रह्म अखंड पद अद्वैत सवही ठामहै ॥ दादू दयाल प्रसिद्ध सतगुरु ताहि मोर प्रणामहै ॥ १५ ॥

दोहा।

सुंदर सतगुरु यूं कहैं, मुक्ति सहजही होय ॥ या अष्टकतें भ्रमामिटै, नित्य पढै जो कोयं ॥ १६ ॥

हरिगीत छंद।

जो पढै नितही ग्यान अष्टक मुक्त होय जु सहजही ॥ संशय न कोऊ रहै ताको दास सुंदर यूं कही ॥ जिन व्है कृपालु अनेक तारे सकल विधि

उद्दाम है ॥ दादू दयाल प्रसिद्ध सतगुरु ताहि मोर प्रणामहै ॥ १७ ॥

दोहा।

सुंदर अष्टक श्रेष्ठ यह, तुम जिन जानैं आंन ॥ अष्टक याहि कहै सुनै, ताकूं उपजै ग्यान ॥ १८ ॥

अथ शीलरे अंगरा सवैया ४ हैं.

इंद्व छंद।

उज्जल जात सरूपहि सुंदर । वस तर भूषण पेरहि नीको ॥ ऊपर भेप दिगंबर दीसत । भीतर शील विना सव फीको ॥ शील पुरुषके फाटाहि लूगडा । सोइ जाणो नर नारमें टीको ॥ शील रतनकी शोभा कहुं कहा । शील रतन सबमें है नीको ॥ १ ॥ जैसे रसोई वनी बहु भाँताकि । एकहि लूण विना सो अलूणा ॥ दीपविना जैसे भौन अँधारजु । प्रान विना जैसे पिंडहि सूना ॥ ऐसेहि शीलविना नर नारजु । मृत्युसमान ज्यूं

जीवत जूना ॥ शील रतन वसे जिन घटमें । सो पुरुषा माहिं पुरुष सलूना ॥ ॥ २ ॥ शीलसुं जैन रु जती कहावत । सीलसुं जंगम शील सँजोगी ॥ सील वरतसूं होय संन्यासी । सील धार दरवेस सो होगी ॥ सीलसुं द्विज भयादिल ऊजल । सील विना सबही जग भोगी ॥ हरिराम कहै नाहिं जातको कारण । सीलकूं धारे सोई निज जोगी ॥ ३ ॥ सीलसुं भक्ति रु मुगति मिले पुनि । सीलसुं जोग रु सीलसुं ध्याना ॥ सीलसुं होय व्यवहार पवीत्तर । सीलसुं होयजु निरमल ग्याना ॥ सीलसुं होय विज्ञान

परापति। सीलसु ब्रह्म स्वरूपहि जाना। शीलहि रतन प्रकाश कियो जव । द्वंद्व अज्ञान जु दूर भगाना ॥ ४ ॥

चौरासी बोल.
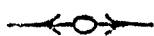
दोहा।

नाकारो नरसो वचन, नटतां उपजै दुःख ॥ यूं चौरासी जायगा, नटै तो वरतै सुःख ॥ १ ॥ मनुषजन्मकूं पायकर, टाले इतना दोष ॥ तो जगन्नाथ नर नारिको, सुधरे लोक प्रलोक ॥ २ ॥

छंद एकपै।

राम समरतां थकिये नहीं ॥ १ ॥

गुरुसेवामें संकिये नहीं ॥ २ ॥

करणीकर गरबाजे नहीं ॥ ३ ॥
नितको नेम घटाजे नहीं ॥ ४ ॥
दान देत अलसाजे नहीं ॥ ५ ॥
संत देख टलजाजे नहीं ॥ ६ ॥
लछविन सीस नवाजे नहीं ॥ ७ ॥
साँची बात उठाजे नहीं ॥ ८ ॥
नीची संगत कीजे नहीं ॥ ९ ॥
साँची परहरि दीजे नहीं ॥ १० ॥
नृपसूं वाद वधाजे नहीं ॥ ११ ॥
ओछी अकल उपाजे नहीं ॥ १२ ॥
दयापालतां लजिये नहीं ॥ १३ ॥
भागभरोसो तजिये नहीं ॥ १४ ॥
आप वडाई कीजे नहीं ॥ १५ ॥

दान उदक फिर लीजे नहीं॥ १६ ॥
दानदेय पछिताजे नहीं ॥ १७ ॥
गुरुको ज्ञान लजाजे नहीं ॥ १८ ॥
आन आसरो लीजे नहीं ॥ १९ ॥
न्याय अदल विन कीजे नहीं॥२०॥
परमारथसूं मुडजे नहीं ॥ २१ ॥
ऊजड मार्ग खडजे नहीं ॥ २२ ॥
मनको मान्यो कीजे नहीं ॥ २३ ॥
दगो किसीकूं दीजे नहीं ॥ २४ ॥
दिन आंथ्यांसूं सोजे नहीं ॥ २५ ॥
सोक भयांसूं रोजे नहीं ॥ २६ ॥
रणमें फूट बताजे नहीं ॥ २७ ॥
हाथां कुरब घटाजे नहीं ॥ २८ ॥

अणछाण्यो जल पीजे नहीं ॥२९॥
कुजस किसीको लीजे नहीं ॥३० ॥
झूठी कविता कीजे नहीं ॥ ३१ ॥
जैर जाणतां खाजे नहीं ॥ ३२ ॥
झूठी निंदा कीजे नहीं ॥ ३३ ॥
घरतज विषय कमाजे नहीं ॥३४॥
काछ विकल मगलीजे नहीं॥३५॥
परनारी चित दीजे नहीं ॥ ३६ ॥
कपटी मितर कीजे नहीं ॥ ३७ ॥
संपतिमें रण रखजे नहीं ॥ ३८ ॥
धन जोवनमें छकिये नहीं ॥ ३९ ॥
राजपुकारू जाजे नहीं ॥ ४० ॥
साँची कहता डरजे नहीं ॥ ४१ ॥

बुरी पराई कीजे नहीं ॥ ४२ ॥
चोरी जारी कीजे नहीं ॥ ४३ ॥
पठ धणीकूं दीजे नहीं ॥ ४४ ॥
सूने मंदिर जाजे नहीं ॥ ४५ ॥
जगमें बुरा कहाजे नहीं ॥ ४६ ॥
ओछी वस्ती वसिये नहीं ॥ ४७ ॥
तातपरज विन हँसिये नहीं ॥ ४८ ॥
चुगल पाडोसी कीजे नहीं ॥ ४९ ॥
धामपरायो लीजे नहीं ॥ ५० ॥
भरम्या भटका खाजे नहीं ॥ ५१ ॥
अलगा उत्तर जाजे नहीं ॥ ५२ ॥
भांग तँमाखूं खाजे नहीं ॥ ५३ ॥
ऊपर खेती वाजे नहीं ॥ ५४ ॥

वेश्याके घर जाजे नहीं ॥ ५५ ॥
कुलको दोष लगाजे नहीं ५६ ॥
परधन काको हरिये नहीं ॥ ५७ ॥
नीची संगत करिये नहीं ॥ ५८ ॥
सूतो सिंह जगाजे नहीं ॥ ५९ ॥
चुडेलण बतलाजे नहीं ॥ ६० ॥
हरिकीभक्ति विसारिये नहीं ॥ ६१ ॥
नाहक निकमो बकिये नहीं ॥६२॥
विक्रम कबहूँ करिये नहीं ॥ ६३ ॥
वादविवादी हुयजे नहीं ॥ ६४ ॥
हलकी वाणी कहजे नहीं ॥ ६५ ॥
झूठी हामल भरजे नहीं ॥ ६६ ॥
वचनकाढके फिरजे नहीं ॥ ६७ ॥

रांड भाँडसूं अडजे नहीं ॥ ६८ ॥
गतराडासूं लडजे नहीं ॥ ६९ ॥
नदी वाहला तरजे नहीं ॥ ७० ॥
डूंगरसेती गिरजे नहीं ॥ ७१ ॥
सुणी वात फैलाजे नहीं ॥ ७२ ॥
सुलझ्याकूं उलजाजे नहीं ॥ ७३ ॥
निरधनकूं डरपाजे नहीं ॥ ७४ ॥
अपजस काने सुणजे नहीं ॥ ७५ ॥
चचो ममो भणजे नहीं ॥ ७६ ॥
जामन किसको हुयजे नहीं ॥ ७७ ॥
अरिसूं गाफिल रहजे नहीं ॥ ७८ ॥
झूठो दोषण दीजे नहीं ॥ ७९ ॥
निवलो सरणो लीजे नहीं ॥ ८० ॥

मूरखकूं बतलाजे नहीं ॥ ८१ ॥
धनविन अर्थ गमाजे नहीं ॥८२॥
लेतां देतां लजिये नहीं ॥ ८३ ॥
भलमाणसकूं तजिये नहीं ॥ ८४ ॥

दोहा ।

ये चौरासी सुभ असुभ, कहे ठामके ठाम ॥ जगन्नाथ करिये सबै, जबलग गृह विसराम ॥ १ ॥ इन चलगत चाले सु गउ, तो भले कहे सब लोय ॥ निश्चै या वा लोकमें, पला न पकडे कोय ॥ २ ॥ या चौरासी चित धरो, तो वा चौरासी बाद ॥ अपणी अपणे हातहै, मनमाने सोइ साद ॥ ३ ॥

वार वार नरतन नहीं, कहै शास्त्र अरु संत । तातें सुकृत कीजिये, के भजिये भगवंत ॥ ४ ॥ जैन जवन शिवधर्म कह, करणी सुधरे काम ॥ दया धर्म इकतारसूं जगन्नाथ कहो राम ॥ ५ ॥

इति ग्रंथ चौरासीबोल संपूर्ण ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना—

मारवाडी महेसरी रामरतन लड्ढा,

विठ्ठलवाडी–मुंबई.